ओ३म्
# आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 16 जून 2019 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 16 जून 2019 से 22 जून 2019

ज्येष्ठ शु. – 14 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 61, अंक 24, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## जयपुर में मनाया गया डी.ए.वी. का 134वां स्थापना दिवस

डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल जयपुर में डी.ए.वी. का 134वाँ स्थापना दिवस आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा राजस्थान के तत्वावधान में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर में एक भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पद को जस्टिस श्री सज्जन सिंह जी कोठारी, पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान ने अलंकृत किया तथा मुख्य वक्ता थे श्रीमान जगदीश शर्मा, प्रबन्ध सम्पादक, दैनिक भास्कर।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया तदुपरान्त डी.ए.वी. गान गाया गया।

कार्यक्रम में राजस्थान प्रान्त की डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के संगीत विशारदों एवं आर्य समाज जयपुर के संगीत प्रेमियों ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों सें उपस्थित जनसमूह को भक्ति रस से सरावोर कर दिया।

संगीतज्ञों ने अत्यन्त तन्मयता व कुशलता से ईश्वर भक्ति, आर्य समाज व ऋषि दयानन्द की महिमा का गुणगान किया।

मुख्य अतिथि जस्टिस कोठारी ने उपस्थित श्रोतृवृन्द एवं सुर–साधकों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस तरह के कार्यक्रमों को सतत करने का आह्वान किया, जिससे अधिकाधिक जन इस पुनीत प्रकल्प का लाभ उठा सकें।

शेष पृष्ठ 11 पर

## डी.ए.वी. (थर्मल) पानीपत में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित

डी.ए.वी. थर्मल कॉलोनी पानीपत में अध्यापकों की दो दिवसीय कार्यशाला का आरम्भ आर्य समाज डी.ए.वी. थर्मल कॉलोनी पानीपत के तत्वावधान में यज्ञ के साथ किया गया। यज्ञ के माध्यम से परमात्मा से सभी के लिए बुद्धि, बल और स्वास्थ्य की कामना की गई।

कार्यशाला में सभी विषय–विशेषज्ञों द्वारा अपने–अपने विषयों को क्रियाकलाप के माध्यम से रोचकता के साथ कैसे पढ़ाया जाए ऐसे तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। सी.बी.एस.ई. और डी.ए.वी. बोर्ड द्वारा पाठ्यकम में किए गए परिवर्तन के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। कम्प्यूटर व इंटरनेट के माध्यम से विषय को और अधिक रोचक बनाने के तरीकों की भी जानकारी प्रदान की गई।

क्षेत्रीय अधिकारी श्री सुरेन्द्र चौधरी ने कहा कि यह कार्यशाला तभी सार्थक होगी जब यहाँ मिली जानकारी का प्रयोग कक्षा में होगा। उन्होंने सभी अध्यापकों का आह्वान किया कि बच्चों पर इसके प्रभाव का भी मूल्यांकन करें। क्षेत्रीय अधिकारी श्री वी. के. मित्तल ने कहा कि मनुष्य जीवन भर सीखता रहता है। एक सफल शिक्षक वही है जो खेल ही खेल में प्रायोगिक तरीके से बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करता है।

शेष पृष्ठ 11 पर

## डी.ए.वी. आई.एम. फरीदाबाद में हुई मासिक यज्ञ की शुरुआत

डी.ए.वी. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, फरीदाबाद ने सर्वशक्तिमान का आशीर्वाद मांगने के लिए अप्रैल महीने के शुरुआत यज्ञ के साथ की।

इंस्टिट्यूट के मुख्य निदेशक डॉ. संजीव शर्मा ने आर्य समाज की परम्पराओं का वहन करने की दिशा में हर महीने की प्रथम सप्ताह में यज्ञ आयोजित करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। डॉ. शर्मा ने इंस्टिट्यूट में आर्य समाज का गठन किया है। अप्रैल मास के इस यज्ञ में वाइसप्रिंसिपल डॉ. रितु गांधी अरोड़ा के अतिरिक्त स्टॉफ सदस्यों और मौजूदा छात्रों की भारी भीड़ ने ईश्वर से सभी उपस्थित लोगों और इस दुनिया में हर आत्मा को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।

डी.ए.वी. आई.एम. का गलियारा वैदिक भजनों और मंत्रों के उच्चारण के साथ गुंजायमान हुआ। इस हवन में सभी ने छात्रों के बेहतर भविष्य की कामना के साथ यह भी प्रार्थना की कि इंस्टिट्यूट गौरव के शिखर को प्राप्त करे। आचार्य जी ने अपने विचारों को भी साझा किया कि आध्यात्मिकता के साथ अपने आपको शिक्षित करने से लक्ष्यों को काफी कुशलता से प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त होता है। हवन का समापन प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – **पूनम सूरी**

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**दिवो विष्ण उत वा पृथ्व्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।**
**हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्।।**

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(विष्णो)** हे सव्रव्यापक परमात्मन्! **(दिव)** द्युलोक से **(उत वा)** और **(पृथिव्याः)** पृथिवी–लोक से [तथा] **(विष्णो)** हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! **(महः)** महनीय **(उरोः)** विस्तीर्ण **(अन्तरिक्षात्)** अन्तरिक्ष–लोक से **(बहुभिः)**वहुत– से **(वसव्यैः)** ऐश्वर्य–समूहों से **(हस्तौ)** दोनों को **(पृणस्व)** भर ले। **(दक्षिणात्)** दाहिने हाथ से **(आ प्रयच्छ)** दान दे **(उत)** और **(सव्यात्)** बाएँ से [भी] (आ [प्रयच्छ]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व–ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन–कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने–बाएँ दोनों हाथों से भर–भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु–लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष–लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण–वायु और अमृतमय वृष्टि–जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथिवी–लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु–लोक, अन्तरिक्ष–लोक और पृथिवी–लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी–लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि–पर्यन्त सब ढ़ांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन–यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त–पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य–क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान–प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों–सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु–लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो। ❑

**वेद मंजरी से**

**इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।**

# त्यागमयी देवियाँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

महात्मा आनन्द स्वामी ने देवी सीता पर कथा सुनाते हुए बताया कि राम और सीता ने पवित्र वेद–मंत्रों द्वारा प्रतिज्ञाएँ कीं। विवाह के उपरान्त अयोध्या में आ गए और सीता ने अपने प्रेम–भरे स्वभाव और सेवा से सबके हृदय में स्थान पा लिया। सीता और राम, दोनों ने राज्य–प्रबंध के सारे ढंग सीख लिए।

महाराज दशरथ ने जब देखा कि राज्य–भार उठाया नहीं जाता और शरीर शिथिल हो रहा है, तो अपनी प्रजा के प्रतिनिधियों का सम्मेलन किया और उनके सामने यह प्रस्ताव रखा, 'मैं अब राज्य –प्रबंध से पृथक् होना चाहता हूँ। यदि आप सब लोग सहमत हों तो राम को यह कार्य सौंप दिया जाए।' सारे प्रतिनिधियों ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और निश्चय हो गया कि अगले ही दिन राम को राजतिलक किया जाएगा।

**अब आगे ...**

**सीता**

परन्तु...

रात ही रात में सारा बना–बनाया खेल बिगड़ गया। मंथरा ने कैकेयी की हृदय में ईर्ष्या–द्वेष की आग जला दी। कैकेयी ने महाराज दशरथ से कहा, 'युद्ध–स्थल में मेरी सेवा से प्रसन्न होकर आपने जो वर दिए थे, उन्हें अब पूर्ण करो/ वे इसी प्रकार से पूर्ण हो सकते हैं कि राम के स्थान पर मेरे पुत्र भरत को राज–सिंहासन पर बिठलाया जाए और राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाए।'

दशरथ तो यह सुनते ही मृतप्राय हो गए। कैकेयी से बहुत कहा कि कोई और वर माँग ले, परन्तु मंथरा ने कुछ ऐसा जादू कर दिया था कि कैकेयी की बुद्धि सर्वथा भ्रष्ट हो चुकी थी। वह उन्हीं दो बातों पर अड़ी रहीं।

उधर सारा नगर राजतिलक का समारोह देखने के लिए तैयारी कर रहा था। ब्राह्मण देवता राजतिलक की सारी सामग्री एकत्र कर चुके थे। राजा दशरथ की प्रतीक्षा हो रही थी।

सीता ने आज अति मनोहर शृंगार किया और भगवान् राम की प्रतीक्षा करने लगी कि उनके साथ मण्डप में चलूँ। आज तो सीता की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी कि वह अब महारानी बनेगी और लोकसेवा के अधिक अवसर उसे प्राप्त होंगे।

इतने में भगवान् राम को संदेश पहुँचा कि आपको कैकेयी के भवन में दशरथ बुला रहे हैं। राम सन्देश पाते ही कैकेयी के भवन में जा पहुँचे। वहाँ जाते ही देखा कि राम के प्यारे पिता दशरथ भूमि पर गिरे पड़े हैं और लम्बे–लम्बे श्वास ले रहे हैं। पूजनीय पिता की यह अवस्था देखकर राम ने कैकेयी से पूछा, 'माताजी! यह क्या हो गया?

कैकेयी ने निर्लज्जता से सारी घटना सुना दी। सुनते ही राम कहने लगे, ' माता, सुनो! राम तो अपने पिता का वचन पूरा करने और पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रचण्ड अग्नि में अपने–आपको भस्म कर सकता है, यह वनवास तो कुछ बात ही नहीं। माता, ऐसा ही होगा। मैं राजतिलक लेकर जितना प्रसन्न होता, उतना ही वनवास लेकर प्रसन्न हो रहा हूँ। लाओ माता, वस्त्र दे दो, मैं धारण कर लूँ।'

राम ने पिता के श्रीचरणों में शीश झुकाया और कैकेयी के चरणों में नमस्कार करके, माता कौशल्या को नमस्ते करने और आशीर्वाद लेने चल पड़े। महाराज बनने वाले पुत्र को आता देख माता कौशल्या उठ खड़ी हुई। छाती के साथ राम का शीश लगाकर कितने आशीर्वाद दे डाले। राम ने निवेदन किया, 'माताजी! मैं आपको नमस्ते करने आया हूँ। मैं 14 वर्ष के लिए वन जा रहा हूँ।'

कौशल्या ने ये शब्द सुने तो अवाक् रह गई। नेत्रों से जलधारा बह निकली। तब राम ने सारी कथा सुना दी। सारे भवन में हाहाकार मच गया। नगरी में भी यह दारुण दुःख देने वाला समाचार पहुँचा तो जनता ने सिर पीट लिया। रुदन ही रुदन सारी नगरी में फैल गया।

कौशल्या से विदा होकर राम अपनी धैर्य–परायण पत्नी सीता के पास पहुँचे। राजतिलक में विलम्ब देखकर और नगरी में हर्ष–ध्वनि के स्थान पर चीत्कार

की आवाज सुनकर कितने ही अमंगल विचार सीता के मन में आ रहे थे। उनका हृदय बैठा जा रहा था कि कोई अशुभ घटना घटने वाली है। उसने दूर से देखा कि लक्ष्मण को साथ लिए राम आ रहे हैं। लक्ष्मण का मुख–मण्डल तो क्रोध से अरुण हो रहा था पर राम वैसे ही प्रसन्नमूर्ति दिखलाई दे रहे थे। आते ही राम और सीता ने एक–दूसरे को नमस्ते की, तब राम ने कहा, 'सीते! मुझे पिताजी की आज्ञा हुई है कि मैं 14 वर्ष के लिए वन में रहूँ, अतएव आप यहाँ प्रसन्नता से सास की सेवा करना।'

सीता ने यह संदेश बड़ी धीरता से सुना। एक ही क्षण में वह सब समझ गई कि उसका क्या कर्त्तव्य है, नारी–धर्म क्या कहता है और ऐसे समय में उसे क्या करना उचित है। बड़ी गंभीरता से उसने कहा, 'प्राणनाथ! भगवान् ने आपको कितना विशाल और धर्म से पूर्ण हृदय दिया है कि आप पिता की आज्ञा से राज्य को छोड़ के वन जा रहे हैं। निःसंदेह पिता की आज्ञा का पालन सब धर्मों से उत्तम है। इस पर मैं आपको बधाई देती हूँ। परन्तु क्या आप मुझे मेरा धर्म–पालन करने से रोकेंगे?'

राम बोले, 'सीते! मैं तुम्हें धर्म करने से कभी भी नहीं रोकूँगा, परन्तु मैं तो पिता की आज्ञा से वन जा रहा हूँ। तुम्हें तो किसी ने वन जाने के लिए नहीं कहा।'

सीता ने मुस्कराकर कहा, 'कहा है प्राणनाथ!'

'किसने?' राम ने आश्चर्य से पूछा।

'मेरे पिता ने।' कहकर सीता हँस दी।

'वह तो मिथिला में हैं? राम चकित थे।

'हाँ वहीं तो कहा था कि जहाँ राम रहें, वहीं रहना। जहाँ राम जाएँ वहीं जाना।

राम ने समझाया, 'परन्तु सीते! वन के कष्ट तुम सहन करने के अयोग्य हो। तुम तो यहीं रहकर सास–श्वसुर की सेवा करो! उनकी सेवा बड़ा पुण्य है। जब–जब मेरी माता मेरे लिए अधीर हो, तुम पुरानी कथाएँ सुनाकर इनका चित्त प्रसन्न करना।'

सीता ने फिर मुस्कराकर कहा, 'माता–पिता, बहन–भ्राता, श्वसुर–सास, सारे ही संबंधी बहुत अच्छे हैं, परन्तु पति के बिना ये सारे के सारे कुछ नहीं। पति के बिना तो अपना तन, यौवन, धन, और राज्य भी दुःखभरा प्रतीत होता है। सारे भोग, रोग, सारे भूषण दूषण प्रतीत होते हैं। जैसे प्राण के बिना शरीर, वर्षाजल के बिना नदी, और कमल के बिना सरोवर होता है, ऐसे ही स्त्री बिना पति के होती है। नाथ! वन के सारे दुःख मेरे लिए सुख हो जाएँगे जब मैं आपके दर्शन कर लिया करूँगी। वन के वृक्षों के पत्ते मेरे लिए सुन्दर बिछौना होंगे और मैं भयंकर वन को ही स्वर्ग समझूँगी।'

राम को सीता की पति भक्ति से सुख तो हुआ, किन्तु समझाना आवश्यक था, 'कितनी सुन्दर बातें तुमने कह डाली प्यारी सीते! मगर यह तो सोचो, कहाँ राजभवन का सुखद जीवन, कहाँ भयावह वन का निवास! इतने सुंदर छत्तीस प्रकार के भोजन करने वाली जंगलों के फल कैसे खा सकेगी? कहाँ रेशमी वस्त्र और कहाँ मृगछाला तथा वल्कल वस्त्र! वहाँ पग–पग पर हिंसक जन्तु! हर समय जीवन का भय! हे हंस की–सी चाल वाली! तुम वन जाने के योग्य नहीं हो। यदि मैं तुम्हें साथ ले भी चलूँ तो लोग मेरा अपयश करेंगे। तुम मेरी बात मानों और यहीं रहो!'

सीता ने कातर स्वर में कहा, 'प्राण ाधार! क्या आज्ञा दे रहे हो? मेरे प्राण इस शरीर में नहीं रह सकेंगे। यह राजभवन मुझे काटने को दौड़ेगा। वन के भयावने दृश्य दिखलाकर आप मुझे यहाँ रहने की प्रेरणा तो कर रहे हैं, परन्तु मैं सुख के उन सारे पदार्थों का सेवन आपके बिना पाप समझती हूँ। मुझे वृक्षों के पत्ते, वन के कन्द–मूल, हिंसक जन्तु और काँटों पर लेटना अधिक अच्छा प्रतीत होता है। संसार का कोई सुख मुझे मेरे धर्म से नहीं हटा सकता और संसार का कोई दुःख मुझे पति–सेवा से विमुख नहीं कर सकता।'

राम ने जब बहुत समझाया परन्तु सीता कुछ भी न समझीं तो राम बोले, 'अब मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम यहीं रहो!' यह आज्ञा सुनते ही सीता के धैर्य का बाँध टूट गया। अधीर होकर रुदन करती वह राम के चरणों में गिर पड़ी, 'भगवान् के वास्ते मुझे अपने से अलग न करो!' रुदन करते–करते सीता की हिचकी बँध गई और अंत में कहा, 'मुझे गुरुजनों की आज्ञा से आपके साथ जाना है, अन्यथा वियोग में मैं अपना जीवन त्याग दूँगी।

लक्ष्मण पास ही खड़े यह सब–कुछ देख–सुन रहे थे। सीता की अवस्था देखकर वह भी अधीर हो गए और रोते हुए कहा, 'भैया! मुझे भी और इन्हें भी संग ले चलो। तीनों मिलकर 14 वर्ष का वनवास प्रसन्नता से पूर्ण कर लेंगे।'

अब राम भी चकित होकर बोले 'यह खूब हुआ'

जब देखा कि सीता किसी प्रकार से भी नहीं मानती तो सीता और लक्ष्मण दोनों को साथ चलने की अनुमति दे दी।

अब वन जाने की तैयारी होने लगी। वल्कल वस्त्र राम कैकेयी से ले आए थे। जब उन्होंने शाही लिबास उतारा और वल्कल वस्त्र पहने तो राम की शोभा तो और अधिक बढ़ गई, परन्तु देखने वालों के नेत्रों से टप–टप अश्रु बहने लगे। सीता ने वल्कल वस्त्र भला कभी काहे को पहने थे। उसे क्या मालूम था कि जीवन में ऐसे वस्त्र भी धारण करने पड़ेंगे! वह भोली–भाली वल्कल वस्त्र न पहन सकी। राम ने आगे बढ़कर पहले ही वस्त्रों के ऊपर वल्कल वस्त्र लपेट दिये। जब राम सीता को छाल के कपड़े पहना रहे थे तो यह दृष्य वसिष्ठ मुनि भी देख रहे थे। वह सहन न कर सके और कैकेयी को बुरा–भला कहने लगे।

कौशल्या का दिल भी भर आया। वह अश्रु न रोक सकी। उसके जनक–दुलारी को छाती से लगा लिया और कहने लगी,'प्यारी सीता! राम–लक्ष्मण का वन में ध्यान रखना। देखा! ये धर्म के बँधे वन को जा रहे हैं, इन्हें कोई कष्ट न हो। संसार में चार प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं। उत्तम स्त्री वह है जो यह समझती है कि संसार में मेरे पति के अतिरिक्त और काई पुरुष है ही नहीं। उससे दूसरे दर्जे की वह स्त्री है जो अपने पति के अतिरिक्त बाकी सारे पुरुषों को अपना पिता, भाई और पुत्र समझती है। तीसरे दर्जे पर वह स्त्री है जो धर्म के भय से पाप कभी नहीं करती; और सर्वथा निचले दर्जे पर वह स्त्री है जो समय न पाकर केवल लोक–लज्जा के कारण पाप करने से बची रहती है, जो अपने पति को ठगने वाली और दूसरे के पति की कामना करने वाली होती है, वह चार सौ वर्षों तक महादुःख भोगती है। थोड़े से सुख के लिए जो जन्म–जन्मांतर के दुःखों का भी ध्यान न रखे, उससे अधिक मंदबुद्धि स्त्री ओर कौन होगी? जो स्त्रियाँ शुद्ध हृदय से पति सेवा में लगी रहती है, वे बिना किसी तप या योग के परम गति को प्राप्त होती हैं। जानकी तुम हो पतिव्रता–धर्म की साक्षात् मूर्ति। सूर्य–वंश की वाटिका का सौन्दर्य अब तुम्हीं से है। वनवासी राम के सुख–दुःख में पूरा साथ निभाना।'

जब कौशल्या माता यह सुन्दर उपदेश दे रह थीं तो सीता पूरे ध्यान से श्रवण कर रही थी। यह उपदेश सुनकर सीता ने कहा, 'माताजी! मैं तो बाल–काल से उसी परिवार में बड़ी हुई हूँ जहाँ पतिव्रत धर्म सदा प्रधान रहा है। जब आपके चरणों में आई, तब भी यही शिक्षा मिली। यहाँ आपके पतिव्रत धर्म को देखकर तो मन पर और भी गूढ़ रंग चढ़ गया है। धन्य हैं आप जिन्होंने पति की आज्ञा से राम जैसे सुपुत्र को वन भेजना सहन किया है। आप मेरी चिन्ता न करें, मैं सिद्ध कर दूँगी कि आप जैसी पविव्रता महारानी की वधू और जनक जैसे धर्मात्मा पिता की पुत्री कैसी होती है।

ये सुन्दर शब्द सुनकर कौशल्या ने फिर सीता को गले से लगा लिया। सबके नेत्र सजल थे। एक मूक–वेदना सबके हृदयों में थी।

उधर रथ तैयार हो चुका था। सुमंत्र रथ लिये खड़ा था। राम, जानकी और लक्ष्मण रथ पर बैठ गये तो राम बोले, 'हाँ, अब ले उड़ो घोड़ों को।'

'परन्तु, ये रुदन करते हुए सहस्रों लोग, इन्हें कैसे हटाऊँ? वह देखिये! सीता–सीता चिल्लाती हुई देवियाँ, जो मार्ग पर लेटी हैं, क्या इन्हें कुचल दूँ? महाराज, मार्ग ही नहीं मिल रहा।' सुमंत्र ने निवेदन किया।

राम कहने लगे, 'ठीक है, मोह–ममता और श्रद्धा–प्रेम के बन्धन में पड़े ये लोग क्या नहीं जानते कि धर्म–पालन के लिए ये बन्धन तोड़ने ही पड़ते हैं?'

बड़ी कठिनाई से सुमंत्र ने मार्ग बनाया। रथ चला और उसके साथ अयोध्या नगरी का धैर्य, सुख, वैभव और सौन्दर्य भी चला गया। रानियाँ अबोध बालिकाओं की भाँति रुदन कर रहीं थीं। दशरथ दोनों हाथों से सिर पीटते हुए 'हाय राम, हाय राम' की रट लगाते–लगाते बेसुध होकर गिर पड़े। उन्हें उठाकर लोग कौशल्या के भवन में ले गए।

अयोध्या स्तब्ध रह गई, 'विधाता! कर्म–गति कितनी अद्भुत है कि जिस दिन राजतिलक मिलने की आज्ञा हुई थी, उसी दिन वनवास मिल गया।'

उधर वनवासियों की पहली रात तमसा नदी के तट पर आई। लक्ष्मण जी ने पत्ते एकत्र किये और एक विशाल वृक्ष के नीचे बिछा दिये। उस रात वहीं विश्राम किया गया।

अगले दिन वे गोमती नदी को पार करके गंगा–तट पर पहुँच गए। राजा गुह ने जब यह समाचार सुना तो तत्काल राम के पास पहुँच गए और निवेदन किया, 'भगवन्! आप यहीं वनवास के दिन व्यतीत कीजिये।'

राम ने धन्यवाद देकर कहा, 'मुझे तो ग्राम में नहीं, वन में रहना है।'

अगली प्रातः स्नान–संध्या, प्रभु–भजन करके तीनों नैया पर चढ़े। सुमन्त्र को यहीं से लौटा दिया गया। खेवट ने नैया खेनी शुरू की। सीता कहने लगी, 'कितना निर्मल जल है यह, और दृश्य कितना सुन्दर है!'

क्रमशः

# ऋषि दयानन्द विषयक मेरा लेखन कार्य

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

**(प्राप्त अप्रकाशित रचनाओं में से)**

मुख्यतः भारत के धर्माचार्यों और समाज सुधारकों से ऋषि दयानन्द के विचारों और कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने में मेरी प्रारम्भ से ही रुचि रही, इसका कारण था–इस विषय पर पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति के वे लेख, जो सार्वदेशिक आदि पत्रों में प्रायः छपते थे। इसी रुचि तथा मेरे स्वतंत्र अध्ययन के आधार पर मैंने एक लघु पुस्तक **'ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य'** शीर्षक से 1949 में लिखी। इसी वर्ष मैंने एम.ए. पास किया था। जब पुस्तक तैयार हो गई तो उसे छपाने की समस्या आई। मैंने आर्यसमाज (नगर) जोधपुर से निवेदन किया कि वे इस ट्रैक्ट को प्रकाशित करा दें। अधिकारियों ने मेरी पाण्डुलिपि को नगर के प्रतिष्ठित, स्वाध्यायशील पं. पन्नालाल परिहार (अधिक्षक राजकीय अद्भुतालय व इतिहास) के पास सम्मति हेतु भेजा। उक्त महानुभाव ने इसे आद्योपान्त पढ़ कर अनुकूल सम्मति दी तथा छपाने की संस्तुति कर दी। उन्होंने इसे प्रकाशन योग्य ठहराया था।

आर्यसमाज ने इसके मुद्रणव्यय का आनुमानिक व्यय ज्ञात किया और जब यह व्यय लगभग पचास रुपये बताया गया तो आर्यसमाज के अधिकारियों ने मुझे अपनी ओर से बीस रुपये और अवशिष्ट तीस रुपये समाज से देने की अनुज्ञा दी।

उस समय मैं मामूली वेतन पर एक हाई स्कूल में सहायक अध्यापक था। तथापि येन–केन–प्रकारेण बीस रुपये जुटाये और न्यूज प्रिंट पेपर पर मेरी यह प्रथम रचना 2006 वि. में छपी। इसमें ऋषि दयानन्द के साथ महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजादि वैष्णव आचार्य, कबीर आदि संतों तथा नवजागरण के राजा राममोहन राय, केशव सेन, विवेकानन्द आदि की वैचारिक दृष्टि से तुलना की गई है। कई पत्रों में इसकी समीक्षाएँ छपीं। यहाँ तक कि भारत सरकार के मासिक पत्र 'आजकल' में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मन्थनाथ गुप्त ने इस छोटे से ट्रैक्ट पर टिप्पणी लिखी। मेरी यह प्रथम रचना कालकोता के आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य को इतनी पसंद आई कि पचास वर्ष बाद 2002 ई. में उन्होंने इसे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल (42 शंकर घोष लेन कोलकाता) से पुनः प्रकाशित किया।

तुलनात्मक अध्ययन में मेरी रुचि निरन्तर बढ़ती रही। मैंने योजना बनाई कि ऋषि की तुलना विभिन्न धर्माचार्यों से विस्तृत रूप में की जाये। इस योजना में सर्वप्रथम ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय तथा दयानन्द की तुलना को लिया। अपने विद्यालय के पुस्तकालय में मुझे पाणिनि ऑफिस इलाहाबाद से छपी 'कम्पलीट् इंगलिश वर्कस् ऑफ राजा राम मोहन राय' पुस्तक मिली। इसमें राजा महोदय के सभी अंग्रेजी ग्रन्थ संग्रहीत थे। मैंने इसे पढ़ कर आवश्यक नोट्स लिए। इस अध्ययन से पता चला कि राममोहन राय यद्यपि ईसाई मिशनरियों के द्वारा किये जाने वाले प्रचार कार्य से तो सहमत नहीं थे किंतु वे ईसाई मत के नैतिक एवं आचार–मूलक सिद्धान्तों के परम प्रशंसक थे। वे ईसायत में स्वीकृत त्रित्ववाद (Trinity) पिता, पुत्र तथा पवित्रता से भी सहमत नहीं थे। तथा मूलतः ईसाई मत को यूनीटेरियल (एकेश्वरवादी) मानते थे। मैंने इस अध्ययन के आधार पर दयानन्द और राम मोहनराय की तुलना पर एक ग्रंथ तैयार कर लिया। अब इसके प्रकाशन की समस्या थी। आगरा के एक पुस्तक प्रकाशक आर्य प्रकाश पुस्तकालय के मालिक पं. मुन्शी लाल शर्मा प्रायः जोधपुर आर्यसमाज के सालाना जलसों पर आते थे। उनसे मेरा परिचय था। उन्होंने इसे छापने की इच्छा जाहिर की और 1956 में मेरा यह ग्रंथ **'महर्षि दयानन्द और राजा राम मोहन राय तुलनात्मक अध्ययन छपा'** इसके प्रूफ शोधन में भरपूर प्रमाद बरता गया था। लेखक को देखने का अवसर नहीं दिया गया। तथापि यह ग्रंथ अपने विषय की प्रथम कृति थी। इसमें दोनों महापुरुषों के धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारों की तुलनात्मक समीक्षा की गई थी।

यदि इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित होता, तो सम्भवतः यह अपने विषय की अपूर्व पुस्तक होती। जब मैंने इस पुस्तक को राजस्थान के प्रख्यात इतिहासकार और आर्य प्रतिनिधि राजस्थान के विगत प्रधान डॉ. मथुरालाल शर्मा को सम्मत्यर्थ भेंट किया, तो इसे देखकर कर उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि मुझे उनके मार्ग–दर्शन में पी.एच.डी करनी चाहिए। मेरी कठिनाई यह थी कि मैं साहित्य (हिन्दी–संस्कृत) का छात्र था जबकि डॉ. शर्मा इतिहास विषयक शोधकार्य को मार्गदर्शन के लिए अधिकृत थे। बाद में इस तुलनात्मक अध्ययन के एक दो सोपानों पर चढ़ना ही मेरे लिए सम्भव हो सका। सायण एवं दयानन्द के वेद विषयक विचारों की तुलना के कुछ लेख मैंने लिखे। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का **'सायण और दयानन्द'** इस विषय की प्रामाणिक रचना है।

मैंने ब्रह्मसमाज के द्वितीय नेता एवं आचार्य देवेन्द्रनाथ ठाकुर (महाकवि नवीन्द्रनाथ के पिता) तथा तृतीय नेता (ईसाईयत से प्रभावित) केशवचन्द्र सेन के विचारों का अध्ययन किया। इनका तुलनात्मक अध्ययन भी कुछ लोगों तक ही सीमित रहा। तदन्तर स्वामी विवेकानन्द के सम्पूर्ण साहित्य का गहराई से अनुशीलन कर विस्तृत नोट्स लिए। रामकृष्ण आश्रम धन्तोली नागपुर ने सम्पूर्ण विवेकानन्द साहित्य का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया है। इसका अध्ययन ही मेरे दयानन्द एवं विवेकानन्द विषयक तुलनात्मक अध्ययन का आधार है। अभी मैं इस ग्रंथ के चार अध्याय ही लिख पाया था कि प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने इन्हें आर्य युवक समाज अबोहर (पंजाब) से 1972 में प्रकाशित करा दिया। तत्पश्चात् मैंने अगले दो–तीन वर्षों में कुल सोलह अध्याय लिख कर इसे पूरा किया। 1975 में इसे वैदिक यंत्रालय प्रकाशन अजमेर ने प्रकाशित किया और अगले वर्ष 1976 में इस पर मुझे पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानन्द के धार्मिक, दार्शनिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचारों का इतना सटीक, विश्लेषण प्रधान विचार ऋषि दयानन्द के विचारों की तुलना के साथ इससे पूर्व नहीं किया गया था। मैंने सुना है कि स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा के पोषक आर.एस.एस. की विचारधारा को मानने वाले पूर्वाग्रही मनोवृत्ति वाले लोग मेरी इस पुस्तक से खफा हैं क्योंकि इसमें विवेकानन्द के चिन्तन का परस्पर विरुद्धवाद (Self contradiction) तथा उनके अन्य विचारों की कमियाँ उजागर होती है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे लाला रामगोपाल शाल वाले को यह ग्रंथ इतना पसंद आया कि उन्होंने उक्त सभा से इसे दो–तीन बार प्रकाशित करवाया। इसका एक विशिष्ट परिवर्धित संस्करण स्व. चौधरी मित्रसेन जी ने प्रकाशित किया। उड़िया भाषा में इसका अनुवाद रामनाथ पटनायक ने किया, जो भुवनेश्वर से 1994 में प्रकाशित हुआ।

स्वामी विवेकानन्द के विचारों की ट्रेजडी इस तथ्य को लेकर है कि उनके चिन्तन में एकरूपता तथा एकातानता (Consistency) का सर्वत्र अभाव है। उनके सभी विचार परस्पर विरुद्धवाद से (आत्मविरोध) ग्रस्त हैं। वे एक स्थान पर वेदों की प्रशंसा करते हैं। अन्यत्र उनकी निंदा करते हैं। यदि एक प्रसंग में मूर्तिपूजा की प्रशंसा करते हैं, तो किसी अन्य प्रसंग में उसकी कटु आलोचना करते हैं। एक ग्रंथ में माँसाहार को अनुचित बताते हैं, तो अन्यत्र उसे उचित कहते हैं। सर्वोपरि बात तो यह है कि वे उन सामाजिक सुधारों की कठोर आलोचना करते हैं, जिनके लिए राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा दयानन्द जैसे समाज सुधारक प्राणपण से प्रतिबद्ध रहे थे। इस आलोचना में विवेकानन्द की जो मानसिकता तथा आन्तरिक कुण्ठा रही है, उसका स्टीक विश्लेषण मैंने अपने इस ग्रंथ में किया है। दयानन्द और विवेकानन्द के व्यक्तित्व की गहराई में जाकर तुलनात्मक समीक्षा सम्भवतः प्रथम बार की गई है। यदि इस ग्रंथ का अंग्रेज़ी अनुवाद हो जाए तो विवेकानन्द के उन लाखों अंधभक्तों की आँखें खुल जायेंगी, जो इस महापुरुष का एकांगी अध्ययन करते हैं। तथापि मेरी दृष्टि स्वामी विवेकानन्द के वैचारिक पक्ष के श्लाघनीय शुक्ल पक्ष को उजागर करने में कहीं कृपणता नहीं रखती। उनके इन विचारों की मैंने सर्वत्र प्रशंसा की है।

**प्रस्तुतिः डॉ. गौर मोहन माथुर**
**3/5, शंकर कालोनी**
**श्री गंगानगर – 335001 (राज.)**
**दूरभाष : 0154–2466299**

## स्वामी दिव्यानन्द जी नहीं रहे

स्वामी दिव्यानन्द जी का 28 मई, 2019 को लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 मई, 2019 को कनखल में गंगा के तट पर सैकड़ों गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

स्वामी दिव्यानन्द जी ने अपने व्यक्तित्व और कर्तव्य से आर्य जगत् में जिस गौरव और उज्ज्वल यश को प्राप्त किय था वह किसी भी आर्य के लिए प्रेरणा और आदर्श का विषय है। लगभग पांच दशकों तक स्वामी दिव्यानन्द जी ने योग, यज्ञ, वैद का अनुशीलन कर इनके प्रचार–प्रसार को बुलन्दी तक पहुँचाने का निष्काम प्रयास किया। मौन सद्भावना से आर्य समाज को श्रीसम्पन्न बनाने में उनका अवदान महत्त्वपूर्ण है।

अंत्येष्टि स्थल पर विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों के प्रतिनिधि तथा अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने अश्रुपूरित नेत्रों से स्वामीजी को अंतिम विदाई दी। स्वामी दिव्यानन्द जी के पार्थिक शरीर को उनके उत्तराधिकारी युवा संन्यासी मेधानन्द जी ने मुखाग्नि देकर उन्हें पंचतत्त्व में विलीन किया। स्वामी दिव्यानन्द जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन 31 मई, 2019 को पतंजलि योगधाम, ज्वालापुर में किया गया।

आर्य जगत् परिवार स्वामी जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत दिव्यात्मा को शान्ति प्रदान करें और हम सब आर्यों को उनके बताये मार्ग पर चलने का सामर्थ्य दें।

# जात–बिरादरी

● भद्रसेन

मनुष्य एक विचारशील परस्पर के सहयोग, सद्भाव, सहानुभूति की अपेक्षा रखने वाला सामाजिक प्राणी है। वह माता–पिता के सर्वविध सहयोग से जन्म लेता है और परिवार, रिश्तेदार,मित्र, पड़ोसीयों रूपी समाज के सहयोग से फूलता–फलता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार–रिश्तेदारी–मित्रमण्डली से जुड़ा हुआ होता है और यही सामाजिकता है। इस सामाजिकता के बिना व्यक्ति का जीवन नहीं चलता। इसी का दूसरा नाम मानव जाति की एकता, समानता है।

सारे संसार के सारे मनुष्य देखने में स्पष्ट ही एक से हैं। तभी तो सभी के शरीरों में हाथ–पैर आदि कर्म–इन्द्रियाँ देखने में जहाँ एक सी हैं, वहाँ उनका *अपना–अपना कार्य भी एक सा ही है।* ऐसे ही सिर–मुख में अधिकतर रहने वाली ज्ञान–इन्द्रियाँ आँख–कान आदि भी एक जैसी ही हैं और ये सारी अपना–अपना कार्य एक ढंग से ही करती हैं। (प्रसिद्धा इन्द्रियार्थाः – वै. 3.1.1) सभी शरीरों में श्वास लेने–छोड़ने का कार्य भी तथा उसके परिणाम से होने वाला खाए–पीए के रस आदि का परिपाक, संचार और विविध इन्द्रियों के बोलने आदि के कार्य भी एक समान नियम में ही होते हैं। ऐसे ही सब के अन्दर सोचने, निर्णय लेने, मैं तथा मेरेपन की अनुभूति करने वाला अन्तः करण भी एक समान ही होता है। ऐसे ही सभी के देह में खाए–पीए का रस–रक्त आदि भी एक जैसा बनता और अपना–अपना कार्य करता तथा प्रभाव दर्शाता है।

जैसे सब के कद–काठ में सामान्य सा भेद लम्बाई–चौड़ाई, रूप–रंग में होता है। ऐसे ही इन्द्रियों, अन्तःकरण आदि की शक्ति, योग्यता, सामर्थ्य आदि में भी सामान्य सा ही अन्तर प्राप्त होता है।

इन्हीं समानताओं के आधार पर वैशेषिक दर्शन अर्थात् भौतिक शास्त्र ने इसको सामान्य (**भावोऽनुवृत्तेरेव हेतुत्वात् सामान्यमेव वै.** 1,2,4 **सामान्यं विशेष इति बुद्धयपेक्षम् वै.** 1,2,3 **सामान्य द्विविधं परमपरञ्च। आत्मस्वरूपानुगमप्रत्ययकारि स्वरूपाभेदेनाधारेषु प्रबन्धेन वर्तमानमनुवृत्ति प्रत्ययकारणम्। सत्तानुबन्धात् सत्सदिति प्रत्ययानुवृत्तिः तस्मात् सा सामान्येमव प्रशस्तपाद**) नाम दिया है अर्थात् इन सभी शरीरों में देखने पर ये–ये समानतायें मिलती हैं और वहाँ इसके आगे पर–अपर भेद माने हैं। जैसे प्राणी–अप्राणी, फिर प्राणियों में पशु, पक्षी, कृमि, मनुष्य आदि भेद सामने आते हैं। यही बात फिर एक–एक वर्ग पर चरितार्थ होती है। जैसे कि पशु–जाति पालतू, हिंसक आदि फिर उनके भी गाय, भैंस, घोड़ा, गधा, हिरण आदि भेद स्पष्ट रूप में हैं।' पर मनुष्य जाति में इस प्रकार का स्वाभाविक स्पष्ट भेद प्राप्त नहीं होता। इसीलिए सांख्य कारिका ने मनुष्यों का एक रूप ही स्वीकार किया है, जबकि अन्य के अनेक भेद माने हैं? (**अष्टविकल्पो दैवस्तैर्यग्योनश्च पञ्चधा भवति। मानुषश्चैकविधः समासतो भौतिकसर्गः।।** 53 **ब्राह्मणत्वाधवान्तर जाति भेदाविवक्षया संस्थानस्य चतुर्ष्वपि वणौष्वविशेषात् तत्त्व कौमुदी**)

वैशेषिक में प्रयुक्त सामान्य को ही अन्यत्र जाति शब्द से स्मरण किया है। जाति शब्द की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए न्यायदर्शन में आया है, कि जिनकी जन्म की प्रक्रिया एक जैसी है या जो अपने समान को जन्म दे सकते हैं। (**सामानप्रसवात्मिका जातिः न्याय.** 2, 2, 71 **या समानां बुद्धि प्रसूते भिन्नेष्वधिकरणेषु यया बहूनीतरतो न व्यावर्तन्ते योऽर्थोऽनेकत्र प्रत्ययानुवृत्ति निमित्रं तत्सामान्यम् वात्स्यायन भाष्यम्**।) वे एक जाति के कहलाते हैं। जात, जाति, जन्म आदि शब्द जनि प्रादुभावे से बनते हैं। जनन की प्रक्रिया से कर्ता, करण, कर्म आदि के रूप में सम्बन्धित होना ही इन शब्दों का मूलभाव है।

**182 शालीमार नगर**
**होशियारपुर पंजाब**

# नेताओं में ऐक्यभाव से समृद्धि

● डॉ. अशोक आर्य

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस देश के उत्तम साधनों पर निर्भर करती है किन्तु इन साधनों का स्रोत नेताओं को ही कहा जा सकता है। नेताओं का ऐक्यभाव अर्थात् देश के विभिन्न दलों में भी एकता का भाव रहेगा तो देश के संसाधनों का उचित प्रयोग हो पायेगा और यदि देश के राजनेता भारत के वर्तमान नेताओं के समान यदि अकारण ही एक दूसरे का विरोध करते रहेंगे, तो देश की प्रगति के सब मार्ग अवरुद्ध हो जायेंगे। प्रत्येक देश की उन्नति के लिए इन नेताओं का सकारात्मक रुख होना आवश्यक है। इस तथ्य को यह मन्त्र इस प्रकार स्पष्ट कर रहा है–

***असंबाधं मध्यतो मानवानाम् यस्या***
**उद्वतः प्रवतः समं बहु।**
**नानावीर्या औषधीर्या बिभर्ति पृथिवी**
**नः प्रथतां राध्यतां नः।।**

अथर्ववेद 12.1.2।।

मन्त्र उपदेश कर रहा है कि :

**नागरिकों में समता व मैत्री भाव**

मन्त्र के माध्यम से प्रथम उपदेश यह दिया गया है कि प्रत्येक देश अथवा मातृभूमि के बुद्धिमान् तथा मननशील व विद्वान् – चिन्तक मनुष्यों में अनेक निम्नताएँ होती हैं। इन नागरिकों में अनेक प्रकार की कमियाँ अथवा न्यूनताएँ भी होती हैं। इसके साथ ही साथ इनमें से अनेक नागरिकों में उच्चताएँ भी होती हैं। जहाँ न्यूनताएँ देश के अहित का कारण होती हैं तो वहाँ उच्चताएँ देश को आगे ले जाने वाली होती हैं। यदि देश में न्यूनताओं से भरे नागरिकों की संख्या अधिक होगी, वहाँ लड़ाई झगड़ों की सत्ता होगी और देश निरंतर अवनति की ओर जायेगा किन्तु जहाँ उच्चताओं से युक्त मनुष्य की संख्या अधिक होगी, वहाँ उन्नति के सब मार्ग खुले रहेंगे।

न्यूनताओं से भरे मानव भी देश में नवनिर्माण में अपना योग दे सकते हैं यदि वह वेद मार्ग पर चलते हुए अपनी न्यूनताओं को दूर करने के लिए वेद का नित्य स्वाध्याय करें और उसके अनुसार अपने जीवन व्यवहार को बदलें। इसके साथ ही एक अन्य उपाय भी देश की उन्नति के लिए मिलता है और वे यह कि न्यूनताएँ होते हुए भी, जब निम्नताओं तथा उच्चताओं के रहते हुए भी सब नागरिक अपने कर्तव्यों को समझने लगें तथा अपनी कमियों को भुला कर विद्वान् लोगों के सहयोग में जुट जायें और विद्वान् लोग भी अपनी उच्चता के अभिमान में न आकर सब के साथ समता स्थापित करें, सबके साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार करें तो निश्चय ही इन नागरिकों का राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

**मातृभूमि उत्तम ओउशाधियों को धारण करें**

मातृभूमि ही वह स्थान है जिसमें अनेक गुणों से युक्त पदर्थों को धारण करने की शक्ति होती है। प्रत्येक देश में ही पर्यावरण का ह्रास भी मिलता है तथा प्रदूषित वस्तुओं के कारण पर्यावरण की वायु भी प्रदूषित होती रहती है, जिस से देश में अनेक प्रकार के रोग आक्रमण करते रहते हैं। इन रोगों से अनेक लोग ग्रसित हो जाते हैं। यदि इन रोगों से निदान न मिले तो इन नागरिकों का स्वास्थ्य इतना बिगड़ जाता है कि वह स्वयं को ही नहीं संभाल पाते । अतः इनके निदान के लिए उत्तम औषधियों व पोषण से भरपूर वनस्पतियों की आवश्यकता होती है। हमारी मातृभूमि ही एक वह स्थान अथवा शक्ति है जो इन रोगों को दूर करने की शक्ति रखने वाली अनेक प्रकार की उत्तम गुणों से भरी हुई लाभदायक तथा रोगनाशक औषधियों तथा स्वास्थ्यवर्धक वनस्पतियों रूपि सम्पति को अपने आप में धारण करती है। यह सब वस्तुएँ या तो वह अपने अन्दर भरे रहती है या फिर इन को पैदा करती है। इस प्रकार हमें उत्तम स्वास्थ्य देकर हमें देश के नवनिर्माण की शक्ति देकर देश का यश बढ़ाने का कारण बनती है।

**मातृभूमि कीर्ति और यश का कारण**

यदि हमारी भूमि जिसे हम मातृभूमि के नाम से जानते हैं, इन रोगनाशक जड़ी–बूटियों तथा पोषक वनस्पतियों के कारण हमारे देश को धनवान् बना देती है, वह मातृभूमि अपनी इन सम्पत्तियों तथा इन वनस्पतियों को हमारे लिए संजोए रहती है। इन उपहारों के कारण हमें भी समृद्ध करती है, धनवान् बनाती है। इससे हमारा तथा हमारी मातृभूमि का यश और कीर्ति विश्व के सुदूर देशों तक जाती है। इस समृद्धि को पाने के लिए दूसरे राष्ट्र भी हमारी मातृभूमि का अनुसरण करने के लिए सदा प्रयास करेंगे। किन्तु इस उपलब्धि को पाने के लिए यह आवश्यक है कि न केवल हमारे राष्ट्र के नागरिकों में ही बल्कि हमारे देश के राजनेताओं में भी एकता का भाव हो। इससे ही देश की समृद्धि संभव है। इसलिए देश के नेताओं में भी व्यक्तिगत अथवा दलगत स्वार्थ को भुलाकर एकता के साथ मिलजुल कर देश को आगे बढ़ाने के उन्नति की ओर ले जाने के उपाय करने चाहियें।

**पॉकेट 1/61 प्रथम तल,**
**रामप्रस्थ ग्रीन, सेक्टर 7 वैशाली 201012**
**गाजियाबाद उ.प्र. भारत**
**चलभाष 09354845426**

# देश की एकता व अखण्डता के लिए अविरुद्ध व समान धार्मिक एवं राजनैतिक विचारधारा का होना आवश्यक

● मनमोहन कुमार आर्य

ऋग्वेद 10/191 में संगठन सूक्त के चार मंत्रों में कहा गया है कि हमारे मन, हृदय, दिल, विचार, भावनायें, सोच, चिन्तन, संकल्प आदि सब एक समान हों। ऐसा होने पर ही हम एकता व अखण्डता के सूत्र में बन्ध सकते हैं। यह एक सामान्य बात है कि यदि मनुष्यों की भिन्न–भिन्न विचारधारायें होंगी तो उनमें एकता नहीं हो सकती। प्रश्न यह है कि क्या मत, विचार, संकल्पों, मन व चित्त आदि का एक समान होना सम्भव है? इसका उत्तर वेद ही देते हैं कि कठिन अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं। विवाह के एक मन्त्र में भगवान ने कहा है कि **'समापो हृदयानि नौ'** अर्थात् हमारे हृदय व दिल जल की भांति मिलें हुए हों। जिस प्रकार दो नदियों के जल को मिला देने पर वह एक हो जाते हैं, उन्हें पुनः पृथक नहीं किया जा सकता, ऐसे ही हमारे दिल, विचार व भावनायें परस्पर एक समान हों। भिन्न–भिन्न विचारों व विचारधाराओं के होने के पीछे कारण क्या है? इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि किन्हीं दो मनुष्यों का धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक ज्ञान एक समान नहीं होता। इसका मुख्य कारण उनका ईश्वर तथा अपनी आत्मा विषयक ज्ञान एक समान न होना होता है, जिनकी शिक्षा व संस्कार एक जैसे होंगे उनके विचार भी एक जैसे हो सकते हैं। यदि सभी वेद पढ़े और वेदानुसार ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप, उसके कार्यों व व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करें तो उनमें इस विषय में समानता हो सकती है जैसी कि ऋषियों व वैदिक विद्वानों में होती है।

ऋषि दयानन्द ने वेद को सत्य ज्ञान की कसौटी व स्वतः प्रमाण माना है। इसको कसौटी मानने से पूर्व उन्होंने वेद की मान्यताओं को तर्क व युक्ति की कसौटी पर कसा और जो बातें यथार्थ व सत्य सिद्ध हुईं उन्हीं को उन्होंने स्वीकार किया और उसका ही प्रचार देश–देशान्तर में अपने व्याख्यानों व ग्रन्थों द्वारा किया। संसार व ब्रह्माण्ड में ईश्वर एक है तो उसका स्वरूप भी एक ही होगा। आत्मा सब एक प्रकार की हैं तो उनका स्वरूप, ज्ञान व सामर्थ्य भी एक जैसा व समान ही होगा। आश्चर्य है कि आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में मत–मतान्तरों के आचार्य व उनके अनुयायी ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव आदि पर एक मत नहीं हो पा रहे हैं और अनेक इस विषय में छल–कपट का व्यवहार करते हुए दीखते हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों व विस्तृत वैदिक साहित्य का अध्ययन कर उसके आधार पर ईश्वर व जीवात्मा सहित सभी विषयों पर सत्य व यथार्थ सिद्धान्त दिये हैं। उन्होंने अपने अध्ययन में जिन हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का उपयोग किया था, व जिन उच्च कोटि के विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त किया था, अभाग्य से हमें वह सब ग्रन्थ व महात्मा उपलब्ध नहीं हैं। ऋषि दयानन्द के वेद व वेदानुकाल निजी सिद्धान्तों को अति संक्षिप्त रूप में जानना हो तो उन्हें उनके लघु ग्रन्थ आर्योद्देश्यरत्नमाला और स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश से जाना जा सकता है। सभी मत–मतान्तर के लोग ईश्वर की उपासना को करना स्वीकार करते हैं, सभी करते भी हैं परन्तु सबकी उपासना पद्धतियों में भेद व अन्तर है। ईश्वर की उपासना का अर्थ ईश्वर को जानकर उसके गुणों, कर्मों व स्वभावों की स्तुति कर उससे प्रार्थना करना है। ईश्वर के गुण अपरिवर्तनीय हैं। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के सभी प्रमुख गुणों का निर्धारण भी वेद व वैदिक साहित्य के आधार पर कर दिया है परन्तु लोग न तो इसे स्वीकार करते हैं और न ही इसका खण्डन करने की योग्यता रखते हैं।

यदि कोई व्यक्ति किसी बात को स्वीकार व अस्वीकार दोनों ही न करे, ऐसे व्यक्ति को विद्वान् व ज्ञानी नहीं कहा जा सकता है। उसे भ्रमित व अज्ञान से युक्त ही कहा जा सकता है। हमारी दृष्टि में ईश्वर विषयक ज्ञान से मत–मतान्तर के लोग भ्रमित हैं और उनके अपने मतों से निजी हित जुड़े होने के कारण वह सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाते। यह बात धार्मिक जगत् में देखी जाती है कि लोग किसी विषय में एक मत होने का प्रयास ही नहीं करते। सब अपनी सत्य व असत्य बात को भी सत्य मानते हैं और दूसरे मत की सत्य बातों का तिरस्कार करते हैं व उसे जानने समझने की कोशिश ही नहीं करते। इस दृष्टि से हमारे सभी वैज्ञानिक साधुवाद के पात्र हैं जो किसी वैज्ञानिक द्वारा किसी पुराने प्रचलित वैज्ञानिक सिद्धान्त में कमी बताकर उसका सुधार व संशोधन करते हैं और उसे प्रयोगों द्वारा व आकड़ों से सिद्ध करते हैं तो उसकी बात को सारा वैज्ञानिक जगत् स्वीकार कर लेता है। हम समझते हैं कि यही दृष्टि, भावना और प्रवृत्ति हमारे धार्मिक व राजनैतिक विचारधारा के लोगों में भी होनी चाहिये। राजनैतिक दल देश के हित के लिये कार्य करने के लिये गठित किये जाते हैं परन्तु यदि उनमें सत्ता प्राप्ति की होड़ लग जाये और यदि वह ज्ञान व अज्ञानवश उससे अपने अनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति में लग जायें तो यह उचित नहीं माना जा सकता। समय समय पर राजनीतिक नेताओं व शीर्ष पदों के लोगों के भ्रष्टाचार के कार्य सामने आते रहते हैं। ऐसा होना देश व समाज के लिये घातक होता है। आज के समय में धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्रों सर्वत्र मर्यादाओं का पतन होता देखा जाता है। पिछले वर्षों में देश में बड़े बड़े घोटालों व भ्रष्टाचार के मामले सामने आये परन्तु इससे देश ने कोई सबक नहीं सीखा। आज भी भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हुआ है। हमारे देश के लोग जो विदेशों में काम करते हैं, वह देश में इसी कारण आना नहीं चाहते कि वहाँ भ्रष्टाचार रहित स्वच्छ वातावरण है और यहाँ नहीं है। हमारे देश में भ्रष्टाचार के अनेक मामले सामने आते हैं परन्तु किसी से धन की वसूली नहीं होती। येन केन प्रकारेण मामला उलझा रहता है और वह आरोपी व्यक्ति पदों पर बना रहता है। यह भी सब जानते हैं कि राजनीति में किसी पद के लिये किसी शैक्षिक व चारित्रिक योग्यता की कोई आवश्यकता व सीमा तय नहीं है। यह आंकलन ही नही किया जाता कि जिस व्यक्ति को जो पद दिया जा रहा है वह उस पद के योग्य है भी या नहीं। पदों की बंदरबाट होती सब देखते हैं परन्तु व्यवस्था ही ऐसी है कि शिक्षित जनता इन दृश्यों को देखने के अलावा कुछ कर नहीं सकती। यह स्थिति उन्नत यूरोप आदि के देशों में नहीं है। इसी कारण वह तेजी से उन्नति कर रहे हैं।

सत्य ज्ञान वेदों के अनुसार देश में सबसे अच्छा समय तभी होगा जब सब लोग धार्मिक व राजनैतिक सभी विषयों में एक विचारधारा में सहमति रखने वाले होंगे, सब शैक्षिक दृष्टि से योग्य होंगे और चारित्रिक तथा नैतिक दृष्टि से भी श्रेष्ठ व उत्तम होंगे। महर्षि दयानन्द का कार्य इसी स्थिति को उत्पन्न करने का था। देशवासियों द्वारा उनके कार्यों में सहयोग न करने व उससे लाभ न उठाने के कारण वह कार्य अभीष्ट परिणाम प्राप्त न करा सका। ऐसा होने पर भी विद्वानों व ज्ञानियों का कर्तव्य हैं कि वह वेद की सत्य मान्तयाओं का प्रचार प्रसार कर देशवासियों को वेद की मान्यताओं से सहमत कर सबको एक मत, एक विचार व एक समान हृदय वाला बनाने का प्रयास करें। यही देश को गौरव प्रदान कर सकता है। यह काम असम्भव सा है परन्तु ऐसे लोग होते हैं जो बड़ी चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। उनमें मृत्यु का डर नहीं होता। देश को आज़ाद कराना आसान काम नहीं था। हमारे वीर युवाओं ने इस चुनौती को स्वीकार किया था और साहस का परिचय देते हुए अपना बलिदान दिया। ऋषि दयानन्द ने जानते हुए भी कि अंग्रेज़ अप्रसन्न होंगे, जान भी जा सकती है फिर भी सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में देश की आज़ादी अर्थात् स्वदेशी राज्य की महत्ता को उद्घोषित करने वाले शब्द लिखे और इसके कुछ ही दिनों बाद वह एक षड्यन्त्र का शिकार होकर मृत्यु धाम पहुँच गये या पहुँचा दिये गये। वैदिक विचारधारा में सामर्थ्य है कि वह संसार के लोगों को प्रभावित कर सकती है। उसके सम्यक रीति से प्रचार की आवश्यकता है। हमारे देश में शास्त्रीय वाक्य **'सत्यमेव जयते नानृतं'** अर्थात् सदैव सर्वत्र सत्य की विजय होती है असत्य की नहीं, की ध्वनि सुनने को मिलती है। वैदिक सिद्धान्त व मान्यतायें सत्य होने के कारण इनकी जय निश्चित कही जा सकती है। इसके लिये अपेक्षित पुरुषार्थ की आवश्यकता है। मार्ग में अनेक अवरोध हैं जिन्हें हटाना होगा। जिस प्रकार विज्ञान में सत्य की प्रतिष्ठा है, हम आशा करते हैं कि भविष्य में धार्मिक व राजनीतिक जगत् में भी सत्य की प्रतिष्ठा अवश्य होगी। देश में एक विचारधारा, एक जैसी भावना व समान सुख–दुःख के भाव का होना देश की उन्नति व देशवासियों के सुख के लिए आवश्यक है। ईश्वर इस कार्य को पूरा करने में देशवासियों को प्रेरणा करें। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

# आडम्बरों के उन्मूलन का प्रारम्भ कहाँ से?

● रामनिवास 'गुण ग्राहक'

आर्य समाज एक ऐसा बुद्धिवादी और विवेकोन्मुख संगठन है, जो प्राणी मात्र के कल्याण में ही आत्मकल्याण की अवधारणा पर बल देता है। आर्य समाज की समस्त मान्यताएँ, मर्यादाएँ, नीति–नियम और व्यवस्थाएँ बौद्धिक विमर्श पर आधारित हैं। इसकी कार्यशैली सर्व कल्याण को लेकर चलने वाली है, पुनरपि आर्य समाजियों की कुछ व्यावहारिक दुर्बलताओं, बाहरी लोगों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियों के कारण आर्य समाज अपनी सैद्धान्तिक स्वीकार्यता को व्यापकता नहीं दे सका। आन्तरिक दुर्बलताएँ बनी रहें तो जीवन भार बन जाता है, ऐसे में सामाजिक क्षेत्र में कीर्तिमान बनाने की बात कौन करे? इतिहास साक्षी है कि आज जैसे यातायात और संचार के साधन न होते हुए भी, आर्थिक संसाधनों के अभाव में भी आर्य समाज की पहली दूसरी पीढ़ी के समर्पित आर्यों ने अपने आत्मबल और संघर्षशीलता के चलते विश्वस्तर तक अपना डंका बजाया। वर्तमान पीढ़ी के उपदेशक उन्हीं के गुण गौरव सुनाकर उदर–भरण मात्र कर रहे हैं। हमें अपने अन्दर उनके पद चिह्नों पर चलने की सामर्थ्य जगानी होगी। हमें हृदय पटल पर चमकदार अक्षरों में अंकित कर लेना होगा कि तप–त्याग और संयम–साधना के बिना न तो कोई आत्मकल्याण के पथ पर एक कदम बढ़ा सकता है और न लोक कल्याण के पथ पर।

सुविधा और समृद्धि के लिए लालायित लोग कभी किसी काम के नहीं होते। स्वार्थ, सम्मान व समृद्धि की कामना को साथ लेकर समाज सेवा की बात करना क्या आडम्बर की कोटि में नहीं आता? अपने आडम्बरों को छोड़े बिना हम दूसरों के आडम्बर मिटाने निकलें तो उपहास ही होगा हमारा। हमें सोचना होगा कि जब मैं अपने हृदय से, अपने जीवन से आडम्बर नहीं मिटा सका, तो भला दूसरों के हृदय व जीवन से कैसे मिटा सकूँगा? मैं स्वयं निरक्षर रहकर किसी को वर्णमाला (अक्षर ज्ञान) नहीं सिखा सकता। आडम्बर उन्मूलन का शुभारम्भ स्वयं से किया जाए तो ही सफल होगा। अगर हम अपने जीवन से आडम्बर मिटाने का संकल्प लेना चाहते हैं तो ध्यान रखें कि आडम्बर को अगर वृक्ष मान लें तो अन्धविश्वास के बीज के बिना आडम्बर का अंकुर नहीं निकलता। अन्धविश्वास ही सब प्रकार के आडम्बरों का जन्मदाता है, उसे निर्मूल किये बिना आडम्बर उन्मूलन सम्भव ही नहीं।

आइये! आडम्बर उन्मूलन के लिए अन्धविश्वास निर्मूलन पर काम करने का मन बनाएँ। पहले यह समझें कि अन्धविश्वास है क्या? सरल शब्दों में कहें तो जिस बात को हमारी बुद्धि भली भाँति समझ न सकी हो, मन–मस्तिष्क में प्रश्नोत्तर या शंका–समाधान किये बिना ही किसी बात को सत्य मानकर बिठा लेना ही अन्धविश्वास है और सरलता से समझिये–अपनी बुद्धि व अपने विवेक का प्रयोग किये बिना ही किसी बात को सुनने, समझने और स्वीकार करने में अपनी बुद्धि लगाई ही नहीं तो ऐसी बात को मैं किसी दूसरे को सुना तो सकता हूँ, समझा नहीं सकता। इसी स्थिति और मनोदशा को अन्धविश्वास कहते हैं। दुःख की बात तो यह है कि अन्धविश्वास से ग्रस्त व्यक्ति जीवन के किसी क्षेत्र में तर्क और युक्ति पूर्वक समझने–समझाने की क्षमता गँवा बैठता है। हाँ अन्धविश्वास से ग्रस्त व्यक्ति भी यदाकदा तर्क और बुद्धि की बात करता हुआ दिखता है, मगर उसके तर्क सत्य को समझने–समझाने के लिए न होकर, जो उसने सुन रखा है उसी का सत्य सिद्ध करने के लिए होते हैं। पाठक वृन्द! बुरा न मानो तो कड़वा सच यह भी है कि अन्धविश्वासी व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में सत्य का सम्मान नहीं कर पाता, सत्य से भटके हुए विचारों वाला व्यक्ति व्यवहार के धरातल पर निष्पक्ष और न्यायप्रिय भी नहीं रह पाता। हम थोड़े से सत्यप्रिय, निष्पक्ष होकर अपने व दूसरों के विचारों और व्यवहारों का अवलोकन करके देखें तो मनोविज्ञान के इस सिद्धान्त को भली–भाँति समझ सकते हैं। अन्धविश्वास की जड़ खोदने के लिए इसके मनोविज्ञान की गहराई में उतरने लगें तो विषय भटक जाएगा।

अन्धविश्वास और आडम्बरों का परस्पर सम्बन्ध बीज और वृक्ष या विचार और व्यवहार के रूप में समझा जा सकता है। अन्धविश्वास से प्रेरित या प्रभावित होकर हम लोक व्यवहार में जो कुछ भी करते हैं, वह आडम्बर कहलाता है। आडम्बरों के विविध रूपों को देखना–परखना भी बड़ा रोचक होता है। आडम्बर धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं होते, हमारे सामान्य जीवन में भी आडम्बरों का खूब बोलबाला रहता है। सत्य और तथ्य से हटकर हम जहाँ भी, जो भी कुछ करते हैं, वह आडम्बर की कोटि में आ ही जाता है। इतना सब होते हुए भी धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में प्रचलित आडम्बर सबसे घातक व पतनगामी होते हैं।

आडम्बरों और उनके जनक अन्धविश्वासों से परिचित होने के बाद इनके उन्मूलन की बात भी कर लें। वस्तुतः किसी समस्या को भली भाँति समझे बिना उसका सटीक समाधान भी नहीं किया जा सकता। समस्या की जड़ समझ में आ जाए तो समाधान भी कहीं आस–पास लुका–छिपा मिल जाता है। हम बता चुके हैं कि यूँ तो आडम्बर जीवन के हर क्षेत्र में कौतूहल दिखा रहे होते हैं, मगर धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में आडम्बर और अन्धविश्वास हमारे जीवन को सर्वाधिक हानि पहुँचाते हैं। आइये! सर्व प्रथम उन्हीं की जड़ खोदने की दिशा में बढ़ें। महर्षि कपिलाचार्य ने सांख्यशास्त्र में दो सूत्र दिये हैं, जो आडम्बरों और अन्धविश्वासों की उत्पत्ति और विनाश का चित्र प्रस्तुत करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश (स.प्र.) के 11वें सम्मुलास में महर्षि दयानन्द उन दोनों सूत्रों –**"उपदेश्योपदष्ट्रत्वात् तत्सिद्धिः।" "इतरथा अन्धपरम्परा"** को देकर लिखते हैं – **''जब उत्तम–उत्तम उपदेशक होते हैं, तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं, और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते, तब अन्धपरम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अन्धपरम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है।"** ऋषि वचनों से स्पष्ट है कि सत्योपदेशों की शृंखला जिस देश, समाज व परिवार में निरन्तर चलती रहती है वहाँ जीवन के परम लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि अच्छी प्रकार होती है। जहाँ सत्योपदेशों की शृंखला टूट जाती है, एक पीढ़ी अपने अनुभव जन्य ज्ञान को दूसरी पीढ़ी के लिए नहीं दे पाती या नई पीढ़ी नहीं ले पाती, तो वहाँ अन्ध परम्परा सिर उठाने लगती है। हाँ पुनः कोई सत्पुरुष सत्योपदेश शृंखला का बीजारोपण कर दे तो अन्ध परम्पराएँ नष्ट होकर ज्ञान के प्रकाश की परम्परा चल निकलती है। इसीलिए महर्षि देव दयानन्द स.प्र. की भूमिका में लिखते हैं – **"सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"** अन्धविश्वास, अन्धपरम्पराएँ और आडम्बर हमारे जीवन को पतन या अवनति की ओर धकेलकर दुर्गति में डालने वाले हैं, दूसरी ओर सत्योपदेश हमारे जीवन को प्रकाश की ओर ले जाकर उन्नतिशील बनाते हैं तथा धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि प्रदान करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि आडम्बर और अन्धविश्वास–अन्धपरम्पराओं के समूल नाश के लिए हमारे पास वेद स्वाध्याय, वेदोपदेश ही एकमात्र उपाय है।

जैसा कि हम प्रारम्भ में ही प्रकट कर चुके हैं कि इस लेख में हम केवल आडम्बर–उन्मूलन की प्रारम्भिक प्रक्रिया पर विचार कर रहे हैं। आडम्बर–उन्मूलन का अभियान चलाने वालों का स्वयं का जीवन आडम्बर मुक्त होगा तभी तो वह दूसरों को आडम्बर मुक्त कर सकेगा। अपने जीवन को आडम्बर शून्य बनाने के लिए सत्य विद्या के मूल स्रोत वेद से जुड़ें, वेद स्वाध्याय का व्रत लें। सत्योपदेश वही कर सकता है, जो सब सत्य विद्याओं के पुस्तक वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना अपना परम धर्म मान लेगा। ईश्वर और धर्म सम्बन्धी अन्धविश्वास और आडम्बर सर्वाधिक पतनकारी होते हैं, इसलिए ईश्वर और धर्म के सम्बन्ध में निर्भ्रान्त ज्ञान होना अत्यावश्यक है। तैत्तरीय ब्राह्मण के ऋषि लिखते हैं – **"यो मनुष्यो वेदार्थान् न वेत्ति, स नैव बृहन्तं परमेश्वरं धर्मं विद्या समूहं वा वेत्तुमर्हति"** (3.12.9.7) अर्थात् जो मनुष्य वेद के सत्य अर्थ को नहीं जानता, वह कभी महान् परमेश्वर को, धर्म को, और विद्या के रहस्य को नहीं जान सकता। धर्म और ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानने वाला धर्म और ईश्वर सम्बन्धी अन्धविश्वासों–आडम्बरों से कैसे बच सकता है? जब वह स्वयं नहीं बच सकता, तो भला दूसरों को क्या बचायेगा? हम सब जानते हैं कि संसार में छोटे से छोटा काम पहले सीखना–समझना पड़ता है। बिना सीखे–समझे हम कुछ भी करने लगें तो निश्चित रूप से असफल होकर उपहास के पात्र बनेंगे। जिन्हें आर्य समाज की वेदी से भजन, उपदेश या प्रवचन करके केवल धन कमाना, परिवार पालना है, वे केवल गाना–बोलना सीखकर काम चला सकते हैं, लेकिन जिन्हें ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी बनकर वेदविद्या का प्रचार–प्रसार करके पुण्यधन, धर्मधन कमाना है, उन्हें पहले अपना जीवन–सुधार करना होगा। अपना जीवन सुधारे बिना कोई कभी किसी का जीवन नहीं सुधार सकता। वह सुधार की प्रक्रिया जानता ही नहीं, उसे पता ही नहीं सुधार होता कैसे है?

विचार स्वयं के सुधार से जुड़े हुए हैं, जिनके मन–मस्तिष्क में स्वयं के सुधार की लालसा है, उनके लिए ये अनमोल रत्न हैं। जो केवल पढ़ने के लिए ही पढ़ते हैं, विचार उनकी चेतना को चुनौती देने वाले हैं। आडम्बर और अन्धविश्वास उन्मूलन का पुण्य कार्य केवल आर्य समाज ही करता है, शेष सब दूसरों के आडम्बर हटाकर अपने थोपना चाहते हैं। उन सबके सब आडम्बरों को मिटाने के लिए हमें स्वयं को कितना सबल और समर्थ बनाना होगा, इसका विचार कर स्वयं को सशक्त बनाएँ और देश–दुनियाँ से आडम्बर दूर भगाएँ।

मो. 9079039088

# आनन्द का वेदानुसारी स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति का उपाय

● प्रो. कमलेशकुमार छ. चोकसी

संस्कृत साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। इस वेद के विषय में परम्परा में माना गया है वह चातुर्वर्ण्य, तीनों लोक, चारों आश्रम तथा जो कुछ भूत, भविष्य तथा वर्तमान ज्ञानादि हैं, वह सभी वेद से प्रसिद्ध हुआ है। (द्रष्टव्य – चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाः चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्। भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।।– मनुस्मृतिः, अध्याय–12 श्लोक–97 (सं. सुरेन्द्रकुमार, प्रका. आर्ष साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण – तृतीय, सन्–1990, पृ. 534) यहाँ पर ज्ञान का आशय विविध विद्याओं से है, ऐसा मान कर वेद को विविध विद्याओं के संग्रह स्थान के रूप में भी स्वीकार किया गया है। इस कारण विषय कोई भी हो, उस के बारे में विचार करने से पूर्व उस विषय में वेद क्या कहता है? यह जानने की इच्छा सुधीजनों को बनी रहती है। (तुलना करें–सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्। वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।। तत्रैव–पृ. 26) इसी पृष्ठभूमि में रह कर हम प्रस्तुत आलेख में आनन्द का वेदानुसारी स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति का उपाय शीर्षक से आनन्द के विषय में वेद के विचार जानने का उपक्रम कर रहे हैं। (वेद से यहाँ पर जो अभिप्रेत है, उसमें 1. चार वेद संहिताएँ तथा उन संहिताओं में पठित मन्त्रों के विविध भाष्यों का समावेश किया गया है।)

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में निम्नानुसार दो मन्त्र हैं –

**यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।**
**सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि**
**चिकित्सति।।6।**
**यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।**
**तत्र को मोहः कः शोक**
**एकत्वमनुपश्यतः।।7।।**

इन मन्त्रों में आने वाले पदों से प्राप्त होने वाला सीधा सादा अर्थ इस प्रकार है– (य) जो मनुष्य (सर्वाणि) सभी (भूतानि) प्राणियों को (आत्मनि) अपने आत्मा में (एव) ही (अनुपश्यति)देखता है (च) तथा जो (सर्वभूतेषु) सभी प्राणियों में (आत्मानम्) अपने आत्मा को (देखता है, वह) (ततः) उस कारण से (न विचिकित्सति) विचिकित्सा को प्राप्त नहीं होता हैं।

(यस्मिन्) जिस में (सर्वाणि) सभी (भूतानि) प्राणी (आत्मा) अपनी आत्मा (एव) ही (अभूत्) हो गया है, (विजानतः) ऐसा विशेष ज्ञान रखने वाले तथा (एकत्वम्) एकत्व को (अनुपश्यतः) देखने वाले – मनुष्य को (तत्र) उस में (कः) कौन (मोहः) (कः) कौन (शोकः) होता है? (अर्थात् कोई मोह या शोक होता नहीं है।) ।।7।।

इन उपर्युक्त मन्त्रों में जो विचार प्रस्तुत हुआ है, उस के केन्द्र में – क. न विचिकित्सति विचिकित्सा को प्राप्त नहीं होता है। तथा ख. (तत्र) उस में (कः) कौन (शोकः) शोक होता है? – ये दो बातें है। ये दोनों बातें एक प्रकार से तो व्यक्ति की परिस्थितिजन्य अनुभूति को अभिव्यक्त करती हैं।

हमारे विचार से इस अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिये 'आनन्द' इस शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिये। क्यों ? आईये इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये तथा थोडी प्रासंगिक बातों की स्पष्टता करने के लिए भूमिका रूप विचार करें।।

0.2. मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मरण पर्यन्त हम जितनी क्रियाएँ करते हैं उन्हें किसी एक शब्द से सूचित करनी हो, तो उसके लिये व्यवहार शब्द सब से अधिक उचित प्रतीत होता है। क्योंकि मनुष्य के रूप में हम चाहें कुछ भी क्रिया करें, उस में किसी दूसरे को साथ ले कर कार्य सम्पन्न करने रूप व्यवहार किसी न किसी प्रकार समाविष्ट रहता ही है।

उदाहरण के रूप में देखें, तो जीने के लिये हम श्वास लेतें हैं। श्वास लेना भी एक प्रकार का व्यवहार ही है। इस व्यवहार में हमें प्राणवायु तथा नासिकादि शरीर के कई अवयव साथ देते हैं। इस प्रकार से जब हम कभी किसी प्राणी या मनुष्य के साथ व्यवहार करते हैं, तब हमें उन उन प्राणियों का या मनुष्य का किसी न किसी रूप में साथ मिलता रहता है। एक व्यक्ति के रूप में भले हम अकेले हों, परन्तु व्यवहार काल में अन्यों के साथ होना होता है। अथवा यों कह सकते हैं कि मनुष्य को अन्यों का साथ लेना होता है।

इस तरह से विचारने पर पता चलता है कि मनुष्य के रूप में जन्म से लेकर मरण पर्यन्त जितना भी जीवन जीते हैं, उस समग्र जीवनकाल में हम सर्वदा व्यवहारमय रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो व्यवहार के प्रारंभ के साथ मनुष्यजीवन प्रारंभ होता है और व्यवहार की समाप्ति पर मनुष्यजीवन की समाप्ति हो जाती है। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि जब तक व्यवहार है, तब तक जीवन है। जैसे ही व्यवहार की समाप्ति हो जाती है, जीवन की भी समाप्ति हो जाया करती है।

0.2.1. मानव के द्वारा संपन्न किये जाने वाले व्यवहार के अनन्तर जो घटित होता है, उस की ओर भी यहाँ ध्यान कर लेना आवश्यक है। विचारने पर पता चलता है कि– प्रथम सोपान में मनुष्य प्राणी या पदार्थ के साथ व्यवहार करता है। फिर द्वितीय सोपान में इस व्यवहार से उत्पन्न होने वाले फल को प्राप्त करता है। अब वह तृतीय सोपान में उस फल के आस्वाद की अनुभूति करता है। तथा चतुर्थ व अन्तिम सोपान में वह इस अनुभूति को वाचिक रूप देता है।

वाचिकरूप देने के अवसर पर जब शब्द की आवश्यकता होती है, और तब वह उसकी पूर्ति के लिये सुख, दुःख तथा आनन्द – इन तीन में से किसी एक का प्रयोग करता है।

सार यह है कि प्रथम व्यवहार, फिर तज्जन्य फल की प्राप्ति, पुनः प्राप्तफल की अनुभूति का अवसर तथा अन्त में उस अनुभूति की (सुख, दुःख तथा आनन्द के रूप में) शाब्दिक अभिव्यक्ति – ये चार सोपान हैं, जो मनुष्य तथा उसके द्वारा किये जाने वाले व्यवहार से संबद्ध है।

0.3. मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार का आधार मोह तथा द्वेष है। इन्हीं दो परिबलों के आधार पर मनुष्य का समग्र व्यवहार चलता है। प्रत्येक व्यक्ति जब किसी पदार्थ या प्राणी के साथ व्यवहार में उतरता है, तब या तो मोह के कारण उतरता है, या फिर द्वेष के कारण। इस बात को इस प्रकार से भी कहा जा सकता है कि यदि व्यक्ति को किसी पदार्थ या प्राणी के साथ व्यवहार में उतरना हो, तो उसे उस पदार्थ या प्राणी से या तो मोह करना होगा या फिर द्वेष करना होगा। बिना मोह या द्वेष के किसी पदार्थ या प्राणी के साथ व्यवहार में उतरना संभव नहीं है। यह एक आम बात है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने द्वारा किये जाने वाले व्यवहार में इसका स्वानुभव होता ही रहता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनुष्य के द्वारा कये जाने वाले प्रत्येक व्यवहार के पीछे किसी न किसी रूप में दो तत्व रहते हैं– 1. मोह (या राग) तथा 2. द्वेष

0.4. मोहवशात् या द्वेषवशात् मनुष्य जब किसी पदार्थ या प्राणी के साथ व्यवहार में उतरता है, तब उसे एक समान अनुभूति नहीं होता है, अपितु भिन्न भिन्न अनुभूति होती हैं। इस कारण से इन अनुभूतियों को कोई एक नाम नहीं दिया जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि इन अनुभूतियों के कितने प्रकार संभवित हैं तथा उन संभवित प्रकारों के आधार पर उन्हें क्या–क्या नाम दिये जा सकते हैं?

हमारे विचार से इन अनुभूतियों के पाँच प्रकार हैं और पाँच प्रकारों के लिये संस्कृत साहित्य में सुख, दुःख, शान्ति, अशान्ति तथा आनन्द के नाम से वाणी में व्यवहृत किया जाता है।

0.5. इस पृष्ठभूमि पर रहकर के विचार ने पर निकर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि–

क. जगत् में जड़ तथा चेतन दो प्रकार से पदार्थ हैं।

ख. इनके साथ मनुष्य अभिगम द्विविध है – 1. मोहात्मक अभिगम तथा (मोह से विपरीत) 2. द्वेषात्मक अभिगम.

ग. मनुष्य को जिससे मोह होता है, उस के साथ ही वह ज्यादा से ज्यादा व्यवहार करना पसंद करता है। उसे ही वह चाहने लगता है। इस चाहने के बाद जब वह इन के साथ व्यवहार प्रारंभ करता है, तब मनुष्य को कुल मिला कर चार प्रकार की अनुभूति होनी संभव बनती है। तद्यथा–

1. व्यक्ति को जिससे मोह है, उसे के साथ व्यवहार करते हुए अपने मन में जिस का अनुभव करता है, उसे सुख कहा जाता है। इतना ही नहीं, जिस पदार्थ से उसे मोह है, उस पदार्थ के प्रति बनने वाली अनुकूल परिस्थिति देखता है, तो भी मनुष्य को सुख का अनुभव करता है।

2. मनुष्यजीवन में इस उपर्युक्त परिस्थिति से विपरीत परिस्थिति भी देखने को मिलती है। इस विपरीत परिस्थिति में मोह का स्थान द्वेष लेता है। व्यक्ति को जिससे द्वेष है, उस के साथ व्यवहार करते हुए अपने मन में जिस का अनुभव करता है, वह अनुभव उपर्युक्त अनुभव से भिन्न होता है। इस भिन्न (दूसरी) स्थिति को दुःख के नाम से कहा जाता है। इतना ही नहीं, जिस पदार्थ से मनुष्य को द्वेष है, उस पदार्थ के प्रति जब वह अनुकूल परिस्थिति देखता है, तो भी उस के मन में दुःख का ही अनुभव करता है।

इन उपर्युक्त दो अनुभवों के साथ–साथ दूसरे दो अनुभवों की भी परिस्थिति बनती है। तद्यथा–

3. व्यक्ति को जिससे मोह है, उस के साथ जब व्यवहार करने का अवसर नहीं प्राप्त हाता होता है, तब वह उस पदार्थ के साथ व्यवहार न करते हुए, अपने मन में जिस का अनुभव करता है, उसे दुःख कहा जाता है। इतना ही नहीं, जिस पदार्थ से उसे मोह है, उस पदार्थ के प्रति बनने वाली प्रतिकूल प्रतिस्थिति से मनुष्य जो अनुभूति करता है, उसे भी दुःख ही कहा जाता है।

4. मनुष्य–जीवन में इस उपर्युक्त परिस्थिति से विपरीत एक दूसरी परिस्थिति भी देखने को मिलती है। इस विपरीत परिस्थिति में मोह का स्थान द्वेष लेता है। पर, व्यक्ति को जिससे द्वेष है, उस के साथ व्यवहार करने का अवसर न मिलने को द्वेष है, उस पदार्थ के प्रति जब वह प्रतिकूल परिस्थिति देखता है, और वह जो अनुभव करता है, वह भी (दुःख नहीं, परंतु इससे विपरीत) सुख ही होता है।

संस्कृतविभागः, भाषसाहित्यभवनम्,
गुजराज विश्वविद्यालयः,
अहमदाबाद–380009 (गुजरात)

# अब निर्णायक फैसला करना ही होगा

● सोमेन्द्र सिंह

भारत का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर अपने स्वर्णिम इतिहास को संजोए हुए है। उसकी हसीन वादियों एवं प्राकृतिक सौन्दर्य ने प्रत्येक मानव मस्तिक को आकर्षित किया है और सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्य–कला ने अपना प्रभाव भारतीय संस्कृति पर डाला है। पद्रहवी सदी में कश्मीर शैव सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र माना जाता था। यह भूमि हिन्दू संस्कृति सभ्यता, कला व विद्वानों की तपस्या स्थल रही है। जिसमें कश्मीर का इतिहास वर्णित है। अनेक विद्वानों ने यहाँ अपने ग्रन्थों को रचकर भारतीय साहित्य की संवृद्धि की है। लेकिन काल के क्रूर हाथों द्वारा उसका ह्रास भी अछूता नहीं रहा, उस पर भी विदेशी आक्रान्ताओं, कटट्रपन्थी सोचों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ जो अनवरत जारी है। कश्मीर आज स्वर्णिम इतिहास से लेकर वर्तमान के रक्तरंजित आतंकवाद का गवाह है और आतंकवाद, अलगाववाद, सांप्रदायिकता की आग में जल रहा है। उस आग में बलिदान होकर हमारे सैनिक उसको शान्त कर रहे हैं। कुछ देशद्रोहियों के कारण यह आग विकराल रूप लेती जा रही है। चौदहवीं सदी के अन्त में कश्मीर में हिन्दू शासन की समाप्ति के बाद मंगोल नेता दलूचा का 1325 में कश्मीर पर भयानक हमला इस आतंक का आरंभ था। कहते हैं कि दलूचा ने पुरुषों के कत्ले–आम का आदेश दिया जबकि स्त्रियों और बच्चों को गुलाम बनाकर मध्य एशिया के सौदागरों को बेच दिया गया। गाँव और शहरों को लूटा गया और उन्हें जला दिया गया।

इस प्रक्रिया को सिकंदर शाह (1389 से 1413) के काल में ब्राहमणों के निर्मम दमन में पूरा किया गया। सुल्तान का आदेश था कि सभी ब्राहमण और हिन्दू विद्वान् मुसलमान बनें या वादी छोड़कर चले जाएँ। उनके मंदिरों को ध्वस्त करने तथा सोने–चाँदी की मूर्तियों को पिघलाकर मुद्राओं में ढालने का आदेश दिया गया।

भारत विभाजन के बाद जम्मू–कश्मीर रियासत को भारत में मिलाने का प्रयास कठोरता के साथ सरदार पटेल ने किया परन्तु राजनीतिक दबाव के कारण यह सम्भव नहीं हो सका। कश्मीर रियासत की सीमा भारत और पाकिस्तान दोनों से मिलती थी। इसका शासक हरिसिंह था। 22 अक्टूबर 1947 ई. को पाकिस्तानी सैनिक अफसरों के नेतृत्व में पठान कबीलाइयों ने कश्मीर में घुसपैठ की। घबराकर 24 अक्टूबर को महाराजा हरि सिंह ने कश्मीर के भारत में विलय पर हस्ताक्षर कर दिए। शेख अब्दुल्ला को रियासत प्रमुख बना दिया गया। 27 अक्टूबर को भारतीय सेना कश्मीर में दाखिल हो गई और उसने धीरे–धीरे आक्रमणकारियों को घाटी से बाहर खदेड़ दिया।

तत्कालीन सरकार भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध के खतरे को देखते हुए माउण्ट बेटन की सलाह पर कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में भेजने को तैयार हो गई।पाकिस्तान परस्त होने के कारण सुरक्षा परिषद ने कश्मीर प्रश्न को ही बदल कर रख दिया। उसने उसे भारत–पाकिस्तान विवाद बना दिया जबकि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग था लेकिन तत्कालीन सरकार की अदूरदृष्टि व फूट डालो और राज करो की सलाह ने कश्मीर को नासूर बना दिया जिसका परिणाम भारत आज तक भुगत रहा है।

भारत कश्मीर के विलय को अन्तिम और अपरिवर्तनीय मानता है तथा कश्मीर को अभिन्न अंग मानता है, परन्तु पाकिस्तान इस दावे को मानने से इंकार करता है। यू. एन. के हस्तक्षेप से हुए युद्ध विराम की वजह से जम्मू–कश्मीर घाटी और गिलगित ब्लूचिस्तान कुछ भू–भाग पाकिस्तान के कब्जे में रह गया जो पाक–अधिकृत कश्मीर कहा जाता है। वह करीब 40 फीसद हिस्सा हासिल करने में कामयाब रहा है। उसने इसमें पूर्वी हिस्सा अक्साईचिन, चीन को दिया जिससे वह उससे सामरिक संबन्ध जोड़ने में सफल रहा। तब से अब तक कश्मीर में पाकिस्तान का छद्म युद्ध अनवरत जारी है। उसका सहयोग करने के लिए भारत के कुछ गददार व अलगाववादी नेता भी पाकिस्तान को समर्थन करते हैं। कश्मीर में लगातार आतंकवाद की समस्या बढ़ती जा रही है। हम अब तक अपनी जमीन पर लड़ते हुए 45 हज़ार से भी अधिक भारतीयों की जानें गवाँ चुके हैं।

एक ऐसा दौर भी आया जब 2.50 लाख कश्मीरी पंडितों ने घाटी से पलायन किया। वे भारत में निर्वासित जीवन यापन कर रहे हैं। उनके लिए शायद कोई मानवधिकार है ही नहीं, जो उनके लिए आवाज़ उठा सके। वे अपने देश में ही बेगानों की तरह जीवन जी रहे हैं, उनसे तो अच्छे घुसपैठिए हैं जिनके लिए कुछ नेता व मानवाधिकारी मरने के लिए तैयार हैं।

आतकंवाद के कारण ही भारतीय वायुसेना का 1999 में पाकिस्तान में फल–फूल रहे आतंकी संगठनों में से एक जैश–ए–मोहम्मद द्वारा अगवाकर लिया गया। 2001 में जम्मू–कश्मीर विधान सभा पर हमला, 2002 में कालूचक हमला जिसमें 21 जवान शहीद हुए व करीब 36 नागरिकों की मृत्यु हुई। उरी, हंदवाड़ा, शोपियाँ, तंगधार, कुपवाड़ा, पंपोर, श्रीनगर, सोपोर, राजौरी तथा बडगाम, पठानकोट तथा पुलवामा हमलों में हमने सैनिकों के रूप में बड़ी कीमत चुकाई है।

पुलवामा हमले में 40 जवानों की शहादत ने देश में क्रोध की ज्वाला को धधका दिया जिसका असर सरकार की कार्यवाही के रूप में देखने को मिला। गृह मंत्रालय के अनुसार 2014 में जहाँ 222 आतंकी घटनाएँ हुई थी, वहीं 2018 में 91 जवान शहीद हुए है। आखिर हम कब तक अपने जवानों की शहादत नेताओं की कुर्सी के लिए देते रहेंगे। नेताओं को खुश करने के लिए 1000 पत्थरबाजों पर दर्ज मुकदमें वापस लेने की कार्यवाही सेना के मनोबल को कमज़ोर करती है। सरकार को कोई ठोस कदम उठाने की जरूरत है नहीं तो स्वर्ग जैसा कश्मीर नरक बन जाएगा।

धारा 370 अनुच्छेद 35क को समाप्त कर देना चाहिए। ध्यान रहे धारा 370 एक अस्थाई धारा है और इसे नेशनल कान्फ्रेस के नेता शेख अब्दुल्ला के दबाव में शामिल किया गया था। देश में तत्कालीन नेतृत्व ने शेख अब्दुल्ला के दबाव में आकर जो भूल की उसके दुष्परिणाम अब हद से ज्यादा बढ़ गए हैं। एक सर्जिकल–स्ट्राइक व एयर–स्ट्राइक से कुछ नहीं होगा जब तक एक स्ट्राइक देशद्रोही नेताओं व अलगाववादियों पर नहीं होगी। देश की सबसे बड़ी विडम्बना है मेरे देश का जवान कश्मीर में शहादत तो दे सकता है, मर सकता है लेकिन कश्मीर में रह नहीं सकता। कश्मीर से धारा 370 को समाप्त किए बिना इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। अब देश को कश्मीर के ऊपर निर्णायक फैसला करना ही होगा। इस देश में एक संविधान एक विधान होगा जो इसका विरोध करेगा उसका वही ईलाज होगा जो सैनिक चाहेंगे। कश्मीर को तबाह होने से पहले कड़े निर्णय लेने की आवश्यकता है जिससे अखण्ड भारतवर्ष का सपना साकार हो सके।

**रिसर्च स्कालर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,**
**मो. 9410816724**
**ईमेल–somandra12884@gmail.com**

# कुण्डलिनी और आठ चक्रों के सम्बन्ध में श्री स्वामी सत्यपति जी के महत्त्वपूर्ण मन्तव्य

श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक (वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़) ने कुण्डलिनी तथा आठ चक्रों के विषय में स्व–मन्तव्य प्रकट करते हुए कहा है –

1. ''यहाँ तो व्यक्ति परम्परा से प्रभावित होता है, यदि बुद्धि से विचार करे तो वह देखता है कि ऋषि–ग्रन्थों में तो कहीं कुण्डलिनी की चर्चा है नहीं!! पुनः इसकी चर्चा करना, लिखना तो हानिकारक हो जाएगा। किन्तु लोक से प्रभावित होकर व्यक्ति ऐसा लिख देता है या ज्ञान ही नहीं होता है तब कुछ–कुछ लिख देता है।'
2. ''न वेदों में, न दर्शनों में, कहीं भी कुण्डलिनी का वर्णन नहीं है।'
3. ''पर कुण्डलिनी तो पूरी बेकार की बात है। ऐसे ही उन्होंने आठ चक्कर बनाये, ये चक्कर वे चक्कर। चक्कर में हो गया... (धनचक्कर)।'
4. ''सुनो !! यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का नाम है चक्र।'
5. ''यदि चक्र हैं तो आयुर्वेद में तो वर्णन होना चाहिए? देखो! वहाँ मिल जाते हैं तो हमें कोई बाधा नहीं है, अन्यथा यह इनके घर की कल्पना है।'
6. ''हमारा कथन है आयुर्वेद में मिलते हैं तो ठीक है, नहीं मिलते हैं तो क्यों चक्कर में डाल रहे हो, इसके बिना काम नहीं चलता?''

**प्रस्तुति : भावेश मेरजा**
**स्रोत : बृहती–ब्रह्ममेधा,**
**भाग–3, पृष्ठ 515–516**

# पत्र/कविता

## मन सुंदर का मोल है

मन तो ऐसा बावरा, सुने सदा तारीफ।
होती जब आलोचना, तब होवे तकलीफ।।
मत संवारो देह को, माटी में मिल जाय।
कर्म न देह संवारियों, पास ईश के जाय।।
स्वभाव से उलट करे, जब कोई व्यवहार।
शंका उस पर तब करो, करके सोच विचार।।
आनंद निंदा में ले, वह कौआ कहलाय।
सभी रसों को छोड़कर, बस कूड़ा ही खाय।।
निंदक अवगुण देखता, वही सीख वह पाय।
साधु गुणों को देखता, और गुणी बन जाय।।
कच्ची मिट्टी की तरह, बच्चा कच्चा होय।
समय की भट्ठी में पके, वही स्वभाव होय।।
घाव लगे तलवार से, समय संग भर जाय।
पर वाणी का घाव तो, भूले नहीं भुलाय।।
मन सुंदर का मोल है, तन सुंदर बेकार।
बिना काम के चाम तो, ना होय स्वीकार।
जो केवल धन मांगता, वह निर्धन कहलाय।
मान गुणों को चाहता, वही धनी बन जाय।।
चाहे मेरे दर्द पर, आप सभी हस पाय।
पर मेरी हंसी कभी, दर्द नहीं दे जाय।।

**नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'**
602 जी.एच. 53, सैक्टर–20
पंचकूला,
0987874899

## दोनों अपना अपना दिल टटोलो

इस्लामाबाद के भारतीय दूतावास में ऐसा क्या हो रहा था, जिसे नाकामयाब करने के लिए पाकिस्तानी फौज और गुप्तचर विभाग ने अपने जवानों को अड़ा दिया। वहां 1 जून को और कुछ नहीं, बस एक इफ्तार पार्टी हो रही थी। न तो वहाँ कोई भारतीय स्वाधीनता का जलसा हो रहा था, न किसी भारतीय विदेश मंत्री की सम्मान–सभा हो रही थी, न कोई पाकिस्तान–विरोधी सम्मेलन हो रहा था। क्या इफ्तार पार्टी में भी अडंगा लगाना किसी इस्लामी राष्ट्र को शोभा देता है?

यह ठीक है कि पाकिस्तान के हुक्मरान भारत को एक 'हिंदू राष्ट्र' ही मानते हैं, जैसे पाकिस्तान को वे एक मुस्लिम राष्ट्र मानते हैं। यदि ऐसा है तो 'हिंदू राष्ट्र' के उच्चायुक्त अजय बिसारिया द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी का पाकिस्तान के हुक्मरानों को जोर–शोर से स्वागत करना चाहिए था लेकिन वहां हुआ क्या? वहाँ निमंत्रित लगभग 300 अतिथियों को पाकिस्तानी पुलिस ने हद से ज्यादा तंग किया। ज्यादातर को अंदर जाने ही नहीं दिया गया। ये लोग थे कौन? ये सब पाकिस्तान के गिने–चुने भद्रलोग थे।

जब पाक सरकार की इस हरकत पर भारत की तरफ से एतराज जताया गया तो पाकिस्तान का जवाब था कि आपने भी 23 मार्च और 28 मई को यही किया था। मैं सोचता हूँ कि दोनों देशों ने यह ठीक नहीं किया। यदि भारत ने आतंकवादी हमलों और चुनावी माहौल में वैसा कर भी दिया था तो पाकिस्तान सरकार, खास तौर से इमरान खान को अपनी ऊंचाई पर टिके रहने चाहिए था। शालीनता दिखाना हमेशा बड़े भाई के लिए जरुरी नहीं होता। छोटे भाई की शालीनता का जलवा तो और भी शानदार होता है। इमरान ने मोदी को जीत पर बधाई दी और उसके कई दिन पहले उन्होंने कहा था कि मोदी यदि जीत गए तो भारत–पाक संबंध सुधरने की काफी संभावना है लेकिन अब लगता है कि जैसे को तैसा की नीति पर यदि दोनों देश चलते रहे तो अगले चार–पांच साल में कई बालाकोट और भी होते रहेंगे।

शंघाई सहयोग संगठन के बिश्केक सम्मेलन में पता नहीं ये दोनों प्रधानमंत्री हाथ भी मिलाएंगे या नहीं? मैं तो दोनों से कहूँगा कि आप दोनों अपना–अपना दिल टटोलो और खुद से पूछो कि दोनों देशों के आपसी संबंध सुधारने के लिए क्या आप दोनों कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि जो आज तक दोनों देशों के सारे हुक्मरान नहीं कर सके।

**डॉ. वेदप्रताप वैदिक**
**www-drvaidik-in**

**********

## वेतन क्यों दिया जा रहा है?

ज्ञात हुआ है कि कुछ वर्षों से, केरल–पश्चिम बंगाल–हरियाणा और दिल्ली प्रदेश की राज्य सरकारें, मस्जिदों के इमामों को, सरकारी कोष से, वक्फ बोर्ड के माध्यम से, वेतन दे रही हैं जो कि पूरी तरह से असंवैधानिक कार्य है।

संविधान की कई धाराएँ परस्पर विरोधी भी हैं। कई धाराओं का अर्थ अपने तरीके से निकाल लिया जाता है। चतुर–संगठित और आक्रामक मुस्लिम संगठनों ने, अपना मजबूत वोट बैंक बना रखा है इसलिए सत्ता के भूखे–कुर्सीवादी हिन्दू नेता, उनकी अनुचित माँगे भी मान लेते हैं क्योंकि हिन्दू समाज असंगठित और जातियों में, बुरी तरह से बंटा हुआ है।

दिल्ली प्रदेश के 300 से ज्यादा इमामों को प्रति माह रु 1000 दिया जाता था अब केजरीवाल सरकार ने राशि बढ़ाकर रु. 18000/– कर दी है।

हरियाणा की भाजपा सरकार भी अब रुपये 1800/– प्रति माह दे रही है। 'मई को दूरदर्शन पर प्रधान मंत्री मोदी ने पश्चिम बंगाल में इमामों को वेतन देने की ममता सरकार की निन्दा की है जबकि वही गलत कार्य उनकी पार्टी हरियाणा में कर रही है। पहले स्वयं ठीक करें तब अन्यों की बुराई करें। केरल में भी इमामों पर धन लुटाया जा रहा है।

हिन्दुओं की राजनीतिक उदासीनता का मुस्लिमों ने हर स्तर पर लाभ उठाया है। अतः हिन्दू जागे और फिर वही गलती न करे जिसके कारण वह 1000 साल तक मार खाता रहा है। इमामों का वेतन बन्द कराया जाए।

**आई. डी. गुलाटी,**
**बुलन्दशहर**
**मो. 8958778443**

**********

## आंवला एक औषधि

आंवला या अमालाकी को सबसे अधिक आयुर्वेदिक घटक के रूप में कहा जा सकता है। यह भोजन और दवा दोनों है। यह छोटा सा फल असंख्य स्वास्थ्य लाभों से भरा है। इसका वनस्पति नाम एम्बलोका ऑफिजिनालिस या फिलेंथस इम्ब्लिका है।

**आंवले के लाभः**

यह कई बीमारियों के लिए उपचार प्रदान करता है और इसलिए इसका व्यापक रूप से आयुर्वेदिक उपचार में उपयोग किया जाता है। आंवला विटामिन सी में बहुत समृद्ध है, और कई खनिज और कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, कैरोटीन और विटामिन बी कॉम्प्लेक्स जैसे विटामिन शामिल हैं। आमला के स्वास्थ्य लाभ में निम्न शामिल हैं:

**आँखों के लिएः** शहद के साथ आंवले का रस पीने से दृष्टि में सुधार होता है। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि यह अंतर–ओक्यूलर तनाव को कम कर, निकटता और मोतियाबिंद में सुधार करता है। विटामिन ए और कैरोटीन मेक्यूलर डिएनेजरेशन, रात अंधापन को कम करता है और आपकी दृष्टि को मजबूत कर सकता है।

**मधुमेह के लिएः** आंवला, कोशिकाओं के पृथक समूह को उत्तेजित करता है जो हार्मोन इंसुलिन को छिपाने के साथ–साथ मधुमेह रोगियों में रक्त शर्करा को कम करते हैं और शरीर को संतुलित और स्वस्थ रखते हैं।

**पाचन के लिएः** आंवला में बहुत अधिक मात्रा में फाइबर है जो आंतों के माध्यम से भोजन को ले जाने में मदद करता है और आपके मल त्याग को नियमित रखता है। फाइबर ढीली मल को भी बढ़ा सकता है और दस्त को कम कर सकता है।

**दिल के लिएः** यह हृदय की मांसपेशियों को भी मजबूत बनाता है। अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल बिल्डअप को कम करने से, आंवले में मौजूद क्रोमियम आथरोसक्लेरोसिस की संभावना को कम कर सकता है, तथा जहाजों और धमनियों में पट्टिका के निर्माण को कम कर सकता है। लोहे की सामग्री नए लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण को बढ़ावा देती है, रक्त वाहिकाओं और धमनियों को साफ करते हुए नए रक्त कोशिकाओं के विकास और पुनर्जन्म को अधिकतम करने के लिए परिसंचरण और अंगों और कोशिकाओं के ऑक्सीजन को बढ़ाता है।

**www.myhealth.com से साभार**

# गुरुकुल-पौंधा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ

देहरादून स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकल का तीन दिवसीय 19वाँ वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। इसी दिन डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। डॉ. सोमदेव शास्त्री कहा ने कि माता–पिता–आचार्यों का कर्तव्य होता है कि वह अपनी सन्तानों व शिष्यों के अशुभ वा बुरे संस्कारों को दूर करने का प्रयत्न करें।

डॉ. सोमदेव शास्त्री ने बताया कि विज्ञान ने भौतिक जगत् में अनेकानेक अनुसंधान कार्य व खोजें की है परन्तु विज्ञान उस विज्ञान व विद्या को नहीं जान सका जिससे बच्चों को सुस्कारित कर उन्हें ईमानदार, सच्चरित्र व देशभक्त बनाया जा सके।

समापन सत्र में आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय का भी व्याख्यान हुआ। उन्होंने उच्च स्वर से कहा कि हम व हमारे पूर्वज ही न्याय विद्या, व्याकरण विद्या व अन्य सभी विद्याओं को जानते थे। संसार की ऐसी कोई विद्या नहीं थी जिसे हमारे पूर्वज नहीं जानते थे। हमारे पूर्वज जिस ओर चलते थे उसी ओर संसार भी चलता था।

आचार्या अन्नपूर्णा ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने वेद का जो मार्ग प्रशस्त किया है। उसी मार्ग पर हमें भी चलना है। वह बच्चा सौभाग्यशाली होता है जिसके माता–पिता धार्मिक, तपस्वी तथा ज्ञानी होते हैं।

डॉ. अजीत कुमार जी ने ऋषि दयानन्द व उससे पूर्व की देश की स्थिति का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि पराधीन व्यक्ति सुखी नहीं होता। पराधीन जीवन मृत्यु से बदतर होता है।

कार्यक्रम में भजनों के लिए बिजनौर से पं. नरेशदत्त आर्य, कोलकत्ता के डॉ. कैलाश कर्मठ एवं अमृतसर से पधारे पं. सत्यपाल पथिक जी के गीत भी हुए।

उत्सव में गुरुकुल के पुराने स्नातक, वायुसेना में कार्यरत और जकार्ता एशियन गेम्स में शूटिंग में रजत पदक प्राप्त करने वाले श्री दीपेन्द्र वा दीपक कुमार को गुरुकुल की ओर से सम्मान किया गया।

# नंगे पैर घूम रहे बच्चों को आर्य समाज ने पहनाई चप्पलें

आर्य समाज कोटा द्वारा तपती दोपहरी में नंगे पैर घूम रहे नन्हे मुन्ने बच्चों को चप्पलें पहनाई गई। आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में शहर के व्यस्ततम मार्ग झालावाड़ रोड़ स्थित गोबरिया बावडी चौराहे के आसपास नंगे पैर घूम रहे बच्चों को चप्पलें पहनाई।

इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा ने बच्चों से गायत्री मंत्र का उच्चारण करवाया और अपने संदेश में कहा कि तपती दोपहरी में जहां तापमान 45 डिग्री से भी अधिक हो गया है आर्य समाज द्वारा इन जरूरतमंद बच्चों को चप्पलें पहनाकर आर्य समाज के 6 नियम संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है का ही पालन किया गया है।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

## जयपुर में मनाया गया ...

श्री अशोक कुमार शर्मा, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, राजस्थान व प्राचार्य डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर जयपुर ने डी.ए.वी. की पृष्ठभूमि, विस्तार व उपादेयता का वर्णन पावर प्वाइण्ट प्रजेन्टेशन द्वारा बताते समाज व राष्ट्र–निर्माण में भूमिका का उल्लेख किया।

मुख्य वक्ता श्री जगदीश शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षण संस्थाएं समाज निर्माण की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दे सकती हैं क्योंकि एक शिक्षक के पास ही वैचारिक परिवर्तन की शक्ति विद्यमान है।

विद्यालय की छात्राओं की भजनों पर आधारित नृत्यात्मक प्रस्तुति भी आकर्षण का केन्द्र रहीं। कार्यक्रम में राजस्थान डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्यगण, स्थानीय आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं आयोजक विद्यालय के अध्यापक व अन्य सदस्यों के साथ ही डॉ. (श्रीमती) इन्दु तनेजा, प्रबन्धिका उपस्थित रही।

श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

## डी.ए.वी. पानीपत में ...

प्राचार्या श्रीमती ऋतु दिलबागी ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्राचार्यों व अध्यापकों का कार्यशाला को सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि सीखने की कोई आयु नहीं होती एक अच्छे शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने आप को हमेशा तैयार रखे और बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी प्रदान करें।

इस कार्यशाला में सात विद्यालयों के 400 के लगभग शिक्षक शिक्षिकाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। उन्होंने संकल्प लिया कि वे कार्यशाला में प्राप्त क्रियाकलाप को बच्चों के ज्ञान में सरल तरीके से वृद्धि करने के लिए कक्षा तक लेकर जाएगें। इस अवसर पर जोन के अनेक प्राचार्य भी उपस्थित रहे।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 12/13-06-2019

# हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में मासिक यज्ञ का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में नॉन टीचिंग सदस्यों द्वारा मासिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ऑफिस सुप्रिंटेंडेन्ट श्री अमरजीत खन्ना ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाते हुए यज्ञ में अन्य सदस्यों सहित आहुतियाँ डाली। श्री रवि मैनी, स्टैनो ने मासिक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि नीयत साफ और मकसद सही हो तो ईश्वर भी साथ होते हैं और अपनी वाणी में मिठास और नीयत साफ रख कर ही अपने व्यक्तित्व में निखार लाया जा सकता है। श्री मनोहर लाल, क्लर्क ने कहा कि सबको प्रेम–प्यार से रहना चाहिए क्योंकि हम जो भी दूसरों को देते हैं वह किसी न किसी रूप में वापिस आता है। श्री अमरजीत खन्ना एक लघु कथा सुनाते हुए संदेश दिया कि हमें संतों, ऋषियों, मुनियों के मुख से निकले वचनों का अनुसरण करना चाहिए और यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में यज्ञ को एक हिस्सा बनाना चाहिए।

श्रीमती वीना रानी, होस्टल वार्डन ने यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा मन्त्रोच्चारण से यज्ञ सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात् उन सदस्यों को सम्मानित किया गया जिनके इस महीने में जन्मदिन आने वाले हैं। शान्तिपाठ के साथ यज्ञ का समापन किया गया।

# डी.ए.वी समाना ने पूर्व छात्रा कोमल गर्ग को किया सम्मानित

डी.ए.वी स्कूल समाना में कोमल गर्ग, सुपुत्री श्री प्रेभ चन्द गर्ग, के दिल्ली मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट के रूप में चयनित होने पर उन्हें सम्मानित किया गया। अब तक ये पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थी। उन्होंने पंजाब यूनिव. र्सिटी चंडीगढ़ से एल.एल.एम. और पी.एच. डी. करने के उपरांत 2019 को दिल्ली ज्युडिशियल सर्विस परीक्षा में 95वाँ रैंक प्राप्त कर अपने माता–पिता और इलाके भर का नाम रोशन किया। सुश्री कोमल गर्ग ने स्कूल के बच्चों के साथ अपनी सफलता के सुनहरे क्षणों को बाँटते हुए उन्हें कुछ प्रेरणादायक मंत्र भी सुझाए। उन्होंने कहा सफलता का मूल मंत्र कठिन परिश्रम और एक लक्ष्य होना चाहिए, इन्हीं के दम पर सफलता हमारे कदम चूम लेती है। बच्चों को अपने अध्यापकों और अपने उद्देश्य के प्रति ईमानदार होना चाहिए।

स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा ने कोमल गर्ग को उनकी शानदार कामयाबी के लिए हार्दिक बधाई दी तथा बच्चों से कहा कि उन्हों भी अपने जीवन में सफलता हासिल करने के लिए इस प्रकार के आदर्श व्यक्तित्व से प्रेरणा लेनी चाहिए।

# अम्बाला शहर में गुणवत्ता आश्वासन सैल की बैठक सम्पन्न

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में गुणवता आश्वासन सैल की बैठक का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेन्द्र नाथ जी, उपप्रधान, डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। डॉ. नीलम ने कम्प्यूटरीकृत प्रस्तुति के माध्यम से महाविद्यालय की मुख्य गतिविधियों पर प्रकाश डाला। विभिन्न विभागाध्यक्षों अपने –अपने विभागों से संबंधित गतिविधियों एवं उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने महाविद्यालय की वार्षिक रिर्पोट प्रस्तुत की।

मुख्यातिथि श्री राजेन्द्र नाथ जी ने सभी प्राध्याकपों के जोश एवं टीम वर्क के साथ कार्य करने की सराहना करते हुए कहा कि महाविद्यालय द्वारा सभी नियमों एवं कानूनों की परिधि में रहकर विद्यार्थियों को एक अच्छा शिक्षक एवं नागरिक बनाने का कार्य बखूबी निभाया जा रहा है। उन्होंने सभी प्राध्यापकों का मनोबल बढ़ाया। डॉ. नीलम लूथरा के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। अंत में शान्तिपाठ से सभा विसर्जित हुई।

# बहादुरगढ़ में लगेगा योग एवं आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र, आश्रम शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु चार दिवसीय ग्रीष्म ऋतु में निःशुल्क योग एवं आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर तथा ऋग्वेद मंडल दो बृहद यज्ञ का आयोजन 27 जून से 30 जून 2019 तक स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सानिध्य में समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है जिसमें प्रमुख वक्ता एवं शंका समाधानकर्ता के रुप में श्री स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ पधारेंगे । शिविर के मुख्य कार्यकम आसन प्राणायाम एवं योगाभ्यास यज्ञ भजन प्रवचन योग दर्शन स्वाध्याय यज्ञ भजन प्रवचन एवं यांका समाधान आदि होंगे। इच्छुक शिविरार्थी श्री राजवीर आर्य, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा मो. नं. 98778655 पर सम्पर्क करें।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**